ईश्वर की पूर्ण कृपा से

मसनवी मीर हसन

: तसवीर समेत :

श्रीमान्मुन्शी प्रयागनारायण भार्गव यंत्रालयाधीश की आज्ञानुसार मुंशी भगवानदयाल एजेन्ट के प्रबन्ध से (पाँचवीं बार)

कानपुर

मुंशी नवलकिशोर (सी. आई. ई.) के छापेखाने में छपी.

जूलाई सन् १९०९ ई०

श्रीगणेशायनमः

मसनवी मीरहसन

प्रारभ्यते

करूँ पहिले तौहीद यज़दां रक़म्
झुका जिसके सिजदे को अव्वल

सरे लौह पर रख बयाज़े जबीं
कहा दूसरा कोई तुझसा न

क़लम फिर शहादत की उंगली उठा
हुआ हर्फ़ ज़न यों कि रब्बुल

नहीं कोई तेरा न होगा शरीक
तेरी ज़ात है वहदहू लाशरी

परस्तिश के क़ाबिल तुही है से करीम्
कि है ज़ात तेरी ग़फ़ूरुल रही

रहे हस्र में तेरे इज़्ज़ो बजल।
तुझे सिजदा करता चलूं सिर के

वो अलहक़्क़ कि ऐसा हि माबूद है
क़लम जो लिखे उससे अफ़ज़

सबों का वही दीनो ईमान है
यह दिल है तमाम और वहीज

तरो ताज़ा है उससे गुलज़ार ख़ल्क़
वो अबरे करम है हवादार ख़

अगरचे वो बेफ़िक्रो ग़ैयूर है
वले परवरिश सबकी मंज़ूर

किसी से न बर आवे कुछ कामजाँ
जो वह मेहरबाँ है तो कुल मेह

अगरचे यहाँ क्या है और क्या नहीं
पर उस बिन तो कोई किसी का

मुवे पर नहीं उससे रफ़ो गुज़श्त
उसी की तरफ़ सबकी है बाज़ग

रहा कौन अरु किसकी बाबत रही
मुये और जीते वही है व

निहाँ सबमें और सबमें है आशकार
ये सब उसके आलम में हैं किस तरह

वही सब हैं उससे वही सबसे बेश
हमेशह से है और रहेगा ह

चमन में है वहदत के इकता वो गुल
कि मुश्ताक़ हैं जिसके याँ जुज़्वो

उसी से है काबा उसी से कनिश्त
उसी का है दोज़ख़ उसी से बिहि

जिसे चाहे जिन्नत में देवे मुक़ाम
जिसे चाहे दोज़ख़ में रक्खे मु

मालिके मुल्क दुनियाँ व दीं — है क़ब्ज़े में उसके ज़म [illegible]

वे नमूदों की उस्से नमूद — दिले वस्तगाँ का है उससे कशूद

की नज़र से है हम सब की दीद — उसी के सख़ुन पर है गुफ़्तो शुनीद

नूर है सब तरफ़ जिलवागर — उसी के यह ज़र्रे हैं शम्सो क़मर

उस्से ख़ाली ग़रज़ कोई शै — वो कुछ शै नहीं पर हर एक शै में है

ौहर में है वो न है संग में — व लेकिन चमकता है हर रंग में

ाहिर में हरचन्द ज़ाहिर नहीं — पै ज़ाहिर कोई उस्से बाहर नहीं

ख़ुलसे कीजे अगर ग़ौर कुछ — तो सब कुछ नहीं है नहीं और कुछ

गुल की है बूये ख़ुशबू गुलाब — फिरे है लिये साथ दरिया हुबाब

इस जोश में आके बहता नहीं — समझने की है बात कहता नहीं

मगो ज़बाँ लावे अपनी हज़ार — लिखे किस तरह हम्द परवर्दिगार

आजिज़ है याँ अंबिया की ज़बाँ — ज़बाने क़लम को यह क़ुदरत कहाँ

ओहदे से कोई भी निकला नहीं — सिवा इज्ज़ दरपेश याँ कुछ नहीं

माबूद यकता ख़ुदा ये जहाँ — कि जिसने किया कुन में कौनो मकाँ

ा अक़्लो इतराक उस ने हमें — किया ख़ाक से पाक उस ने हमें

म्बर को भेजा हमारे लिये — वसी औ इमाम उसने पैदा किये

ाँ को उन्हों ने दिया इन्तज़ाम — बुराई भलाई सुझाई तमाम।

ाई उन्हों ने हमें राह रास्त — किता हो न उस राह की बाज़ख़्वास्त

वह कौनसी राह शरए नबी — कि रस्ते को जन्नत की सीधी गई

नात हज़रत रिसालत पनाह सल्ले अ-
ल्ला अलेह व आलही व सल्लम।

ो कौन याने रसूले करीम — नबूवत के दरिया का दुर्रे यतीम

ा गो कि ज़ाहिर में उम्मी लक़ब — यह इल्मेल दुन्नी खुला दिल पै सब

[illegible] आशकार करम
हुआ न हुआ मरीं उस का जो आशकार
उठा कुफ़ इसलाम ज़ाहिर किया
किया हक़ ने नबियों का सरदार उसे
नबुव्वत जो कि हक़ ने उस पर तमाम
बनाया समुझ बूझ कर ख़ूब उसे
कहूं उस के रुतबे का क्या मैं बयाँ
मसीहा उस के ख़सगाह का पारः दोज़
ख़लील उस के गुलज़ार का बाग़बाँ
ख़िज़िर उस के सरकार का आबदार
मुहम्मद के मानिन्द जग में नहीं
यह थी रम्ज़ जो उस के साया न था
न होने के सायः का था यह सबब
वह क़ादर इसलिये था न साया फ़िगन
बना सायः उस का लतीफ़ इस क़दर
अजब क्या जो उस गुल के सायः न हो
ख़ुश आयान साये को होना जुदा
न डाली किसी शख़्स पर अपनी छाँउ
वह होता ज़मीं गीर क्या फ़र्श पर
न होने की सायः के एक वजह और
जहाँ तक कि थे याँ के अहले नज़र
सभों ने लिया पुतलियों पर उठा
सियाही की पुतली का है यह सबब

चले हुक्म पर उस के लौहो क़ल[illegible]
गुज़श्ता हुए हुक्म तक़वीम [illegible]
बुतों को ख़ुदाई से बाहर कि[illegible]
बनाया नबुव्वत का हक़दार [illegible]
लिखा अशरफ़ुल नाम ख़ैरुल[illegible]
ख़ुदा ने किया अपना महबूब
खड़े हों जहाँ बाँध सफ़ मुरसि[illegible]
तजल्लीय तूर उस की मशअलए[illegible]
सुलैमां से कई मुहरादार उस के
ज़िरह साज़ दाऊद से हाँ हज़[illegible]
हुआ है न ऐसा न होगा क[illegible]
कि ऐसो हुई हाँ तक आया न [illegible]
हुआ सर्फ़ पोशिश में काबे के [illegible]
किया कुल वह एक को जिज़ का [illegible]
न आया लताफ़त के बाइस न[illegible]
किया वह गुले क़ुदरते हक़ की [illegible]
उसी नूर हक़ के रहा ज़ेर [illegible]
किसी का न मुँह देखा देख उस के [illegible]
क़दम उस के सायः का था अर्श[illegible]
मुझे ख़ूब सूझी ये है शर्त गो[illegible]
समुझ साय ये नूर कुहलल ब[illegible]
ज़मीं पर न साये को गिरने दि[illegible]
वही सायः फिरता है आखों में [illegible]

[illegible]रनः यहथी चश्म अपनी कहाँ	उसी से [illegible]शन है सारा जहाँ।
[illegible]रसे जो सायव वह साय:रहा	मलायक के दिल में समाया रहा

मनक़बत हज़रत अमीरुल मोमनीन अली अलेहुस्सलाम॥

[illegible]हमसर उस का कोई जुज़ अली	कि भाई का भाई वसी का वसी
[illegible] जो नबूव्वत नबी पर तमाम	हुई न्यामत उसकी वसी पर तमाम
[illegible]ँ फ़ैज़ से उसके है कामयाब	नबी आफ़ताबो अली माहताब
[illegible]ती दीनो दुनिया का सरदार है	कि मुख़्तार के घर का मुख़्तार है
[illegible]रिइमामत के गुलशन का गुल	बहारे वलायत का बाग़े संबुल
[illegible]लीरज़दारे ख़ुदा वो नबी	ख़बरदार सिर्रे ख़फ़ी ओ जली
[illegible]ती बन्दये ख़ास दरगाह हक़	अली सालिको रह रवे राह हक़
[illegible]ली ये वली इब्न उम्मे रसूल	लक़ब शाहि मरदाँ वज़ीजे बतूल
[illegible]है यों जो चाहे कोई बैर से	ये निसबत अली को नहीं ग़ैर से
[illegible]ानफ़्स पैग़म्बरश ख़ांदह अस्त	दिगर शाफ़ज़ीलत बकस मांद अस्त
[illegible]ाँ बात की अब समाई नहीं	नबी और अली में जुदाई नहीं
[illegible]ीवो अली इन दो निस्बत बहम	दुताओ यके चूं ज़बाने क़लम।
[illegible]ती का उदू दोज़ख़ी दोज़ख़ी	अली का मुहिब जन्नती जन्नती
[illegible]ीयो अली फ़ात्मः और हसन	हुसैन इब्न हैदर यह हैं पंच तन
[illegible] उन ये दो जग की ख़ूबी तमाम	उन्हीं पर दरूद और उन्हीं पर सलाम
[illegible]ली से लगा ताब: मेहदीय दीं	यह हैं एक नूरे ख़ुदाये बरीं।
[illegible]ीं से है क़ायम इमामत का घर	कि बारह सिदं हैं यह असना अशर
[illegible]ीरः कबीरः से यह पाक हैं।	हिसाबे अमल से यह बेबाक हैं
[illegible]आयाँ से ज़ाहिर कमाले रसूल	कि बेहतर हुई सब से आले रसूल

तारीफ़ असहाब पाक रिज़वाँ अल्लाह अलैहुम

सलामउन पः जोउस के असहाब हैं	वह असहाब कैसे कि अहबाब
ख़ुदा ने उन्हों को कहा मोमनीन	वह हैं ज़ीनते आसमानो ज़मी
ख़ुदा उन से राज़ी रसूल उन से ख़ुश	अली उन से राज़ी व तूल उन से ख़ु
हुई फ़र्ज़ उनकी हमें दोस्ती।	कि हैं दिल से वह जाँ निसारे न

मुनाजात बदरगाह क़ाज़ी उलहाजात।

इलाही बहक़्क़े रसूले अमीं	बहक़्क़े अली ओब असहाब
बहक़्क़े बतूलो व आले रसूल	करूं अर्ज़ जो मैं सो होवे क़बू
इलाही मैं बन्दः गुनहगार हूं	गुनाहों में अपने गराँबार
मुझे बख़्शियो मेरे परवरदिगार	कि तू है करीम और आमुर्ज़गा
मेरी अर्ज़ यह है कि जब तक जियों	शराबे मुहब्बत को तेरी पियं
सेवा तेरी उल्फ़त के और सब है हेच	यही हो न हो और कुछ सच
जो ग़म हो तो हो आल अहमद का ग़म,	सेवा इस अलम के न हो कुछ अ
रहे सब तरफ़ से मेरे दिल को चैन	बहक़्क़े हसन और बहक़्क़े हुसै
किसी से न करनी पड़े इलतिजा	तु कर ख़ुदबख़ुद मेरी हाजत र
सहीह और सालिम सदा मुझ को रख	ख़ुशी से हमेशा ख़ुदा मुझ को
मेरे आलो औलाद को शादरख	मेरे दोस्तों को तु आबाद र
मैं खाता हूं जिनका निमक ऐ करीम	सदा रहम कर उनपै तू ऐ रहि
जियूं आबरू और हुरमत के साथ	रहूं मैं अज़ीज़ों में इज़्ज़त के स
बर आवें मेरे दीनो दुनिया के काम	बहक़्क़े मुहम्मद अलैहुस्सल

तारीफ़ सख़ुन

पिला मुझ को साक़ी शराबे सख़ुन	कि मस्त हो जिस से बाबे सख़ु

ख़ुन की मुझे फ़िक्र दिन रात है   सख़ुन ही तो है और क्या बात है
ख़ुन के तलबगार हैं अक़्लमंद   सख़ुन से है नामे निकोयाँ बलंद
ख़ुन की करैं क़द्र मर्दानकार   सख़ुन नाम उनका रखै बरक़रार
ख़ुन से वही शख़्स रखते हैं काम   जिन्हैं चाहिये साथ नेकी के नाम
ख़ुन से सलफ़ की भलाई रहे   ज़बाने क़लम से बड़ाई रहे ।
हाँ रुस्तमो गेवो अफ़रासियाब   सख़ुन से रहे याद यह नक़्श ख़्वाब
ख़ुन का सिलायार देते रहे   जवाहिर सदा मोल लेते रहे ।
ख़ुन का सदा गर्म बाज़ार है   सख़ुन संज उसका ख़रीदार है
जब तलक दास्ताने सख़ुन   इलाही रहैं क़द्रदाने सख़ुन

...दह शाह आलम बादशाह ग़ाज़ी बहादुर की।

...े वे फ़लक शाह आली गुहर   ज़मींबोस होंं जिसके शमसो क़मर
...ाँ उसके परतौ से है कामयाब   वह है बुर्ज अक़लीम में आफ़ताब
...ी मेहर से है मुनव्वर यह माह   जहाँ होवै और हो जहाँ दार शाह
...महरे मुनव्वर यह माहे मुनीर   और उस्का यह नज़्मे सआदत वज़ीर

मदह वज़ीरुल् मुमालिक जनाब नव्वाब आसफ़ुद्दौला बहादुर की.

फ़लक रुतबः नव्वाब आली जनाब　किहै आसफ़ुद्दौलः जिसका ख़ि
वज़ीरे जहाँ हाकिमे अदलोदाद　है आबादिये मुल्क जिसकी ख़ु
जहाँ अद्ल से उसके आबाद है　ग़रीबों फ़क़ीरों का दिलशाद
फिरे भागता मोर से फ़ील मस्त　ज़बरदस्त ज़ालिम पः है ज़ेरद
किताँ पर करै मह अगर बदनज़र　तो आधा इधर हो और आधा उ
किसी का अगर सुफ़लै ज़ुल्फ़ दिल　तो खाया करै पेच वह मुत्तसि
वह इन्साफ़ से जो गुज़रता नहीं　किसी पर कोई शख़्स मरता न
नहो बाघ बकरी में कुछ मुख़्तसू　अगर उस का चेता न होवै क
गर आवाज़ सुनें सेर की कुछ कहे　तो बाज़ आये चस्पख़ कि ख़्हरी
फिरै शमअ के गिर्द गर आके चोर　सबा खींच ले जावे उसको व
न ले जब तलक शमअ पर बानगी।　पतंगे के पर को न छेड़े क
अगर आप से उस पः वह आगिरे　तो फ़ानूस में शमअ छिपती
गर अख़्गियाँ न उसके जलै बालोपर　तो गुलगीर ले शमअ का का
उसे अद्ल की जो तरह याद है　कि सैयार है यह ख़ुदादाद
सितम उसके हाथों से रोया करै　सदा फ़ित्नये दहेर सोया
घरों में फ़राग़त से सोते हैं सब　पड़े घर में चोर अपने रोते हैं
वह है बाइसे अम्न ख़ुरदो कलाँ　किहै नाम से उसके मुशतक

बयान सख़ावत का.

बयाने सख़ावत करूं जो रक़म　तो ज़ेरैज़ काग़ज़ पै होवे क़ल

नज़रसे तवज्जह की देखा जिधर।
दिया मिस्ल नरगिस उसे सीमोज़र

सख़ावत यह अदना सी इक उसकी है
कि यक दिन दोशाले दिये सात से

सिवा इसके है और यह दास्ताँ
कि है जिसपै कुर्बान हातिम की जाँ

हुई काम जो इक बार कुछ बर्षकाल
गरानी सी होने लगी एक साल

ग़रीबों का दमसा निकलने लगा
तवक्कुल का भी पाँव जलने लगा

वज़ीरुलमुमालिक ने तहरीर कर
हुज़ूर की दिया राह में मालो ज़र

मुहल्ला मुहल्ला किया हुक्म यह
कि नाड़े से इस ग़म की खोले गिरह

यह चाहा कि ख़िल्कत किसी ढबजिये,
कई लाख लाख यक दिन में दिये

यह लग़ा जिरा यड़ी मुल्क में जो तमाम,
लिया हाथ ने उसके गिरतों को थाम

यह बन्दः तवाज़ी यह जाँ परवरी
यह आईन सरदारियो सरवरी

हुई ज़ात पर उस सख़ी के तमाम
तकल्लुफ़ है आगे सख़ावत का नाम

फ़क़ीरों की हैं याँ तलक तो बनी
कि यक यक याँ हो गया है ग़नी

यह क्या दख़्ल आवाज़ दे जो गदा
चटक की कली की न होवे सदा

न हो उसका शामिल जो अबरे करम
असर अब्र नैसाँ से होवे अदम

क़दह लेके नरगिस जो होवे खड़ी
तो ख़िजलत से जावे ज़मीं में गड़ी

हर एक काम उसके जहाँ की मुराद
फ़लातूं तबीयत अरस्तूं न ज़ाद

जब ऐसा वह पैदा हुआ है बशर
तब उसको दिया है यह कुछ मालो ज़र

बयान शुजाअ़त का.

लिखूं गर शुजाअ़त का उसके बयाँ
क़लम हो मेरा रुस्तमे दास्ताँ।

ग़ज़ब से वह हाथ अपना जिसपर उठाय,
अजल का तमाचा क़सम उसकी खाय

करे जिस जगह ज़ोर उस का नमूद
दिले आहन उस जा पे होवे कबूद

चले तेग़ गर उसकी रोज़े मसाफ़
नज़र आये दुशमन से मैदान साफ़

अगर बेहयाई से कोई अदू
मिला देवै उस तेग़ से मुँह कभू

तो ऐसी ही खाकर गिरें सिर के बल
कि सिर पर खड़ी उस के रोये अजल

नहो क्योंकि वह तेग़ बरके ग़ज़ब
कि खुर्शीद की तरह दीर जौहर हैं सब

हुई ह्कम क़िसिम उस की तेग़े अजल
निकल आये यह गिर पड़े वह उगल

लगा दे अगर कोह पर एक बार
गुज़र जाय यों जैसे साबुन से तार

ग़ज़ब से ग़ज़ब उस के काँपा करे
तहव्वर से हैबत भी उस के डरे।

और उस ज़ोर पर है यह हिलमो हया
कि है ख़ुल्क का जैसे दरिया बहा

जहाँ तक कि है इल्मो कसबो कमाल
हर इक फ़न में माहिर है वह ख़ुश ख़िसाल

सख़ुन दाँ सख़ुन संज शीरीं बयाँ
वज़ीरे जहानो वहीदे ज़माँ।

सख़ुन की नहीं उस्से पोशीदः बात
ग़वामिज़ हैं सब सहल उन के नुक़ात

सलीक़ः हर यक फ़न में हर बात में
निकलती नई बात दिन रात में

सदा सैर पर औ तमाशे पै दिल
कुशादः दिली औ ख़ुशी मुत्तसिल

नहो उस को क्योंकर हवाये शिकार
तहव्वर शआरी का है यह शआर।

दिलेरों का है बस दिलेरी से काम
कि रहता है शेरों को शेरों से काम

शहाँरा ज़रूर अस्त मशक़े शिकार
कि आयद् पये सैद दिलहा बकार।

खुले बन्द हैं जितने सहरा में सैद
हैं नख्वाब के दाम उल्फ़त में क़ैद

ज़ि सेहरश दिले आहुवाँ सोख़्तः
बफ़ितराके ओ चश्महा दोख़्तः

शुजाअ़त का हिम्मत का यह कान है
दिरम हाथ में है कि बादाम है।

न होता अगर उसको अज़्मे शिकार
दरिन्दों से बचता न शहरो दयार

न बचते जहाँ बीच ख़ुर्दो बुज़ुर्ग
यह हों आते स[illegible] क़म्ये शेरो गुर्ग।

यह इनसान पर उसका अहसान है
कि बेख़ौफ़ इनसान की जान है

बनाई जहाँ उसने नख़चीर गाह
रहे सैद स्याँ आके शामो पगाह

ख़बासैद बहरी पै जिस दम ख़याल
लिया पुश्त पर अपने माहि ने जाल

मगर अपना देते हैं जो जान कर
किया पोंपै गिरते हैं आन आन कर

न समझो निकलती है दरिया में ख़स
ख़ुशी से उछलती है दरिया में ख़स

चरिन्दों का दिल उस तरफ़ है लगा
परिन्दों को रहती है उसकी हवा

पलंगो का है बल कि चीता यही
कमर आ बँधावे हमारी कोई।

ख़बर उसकी सुनकर थे गैंड़ा चले
कि हाथी भी हो मस्त रेंड़ा चले।

जो कुछ दिल में गैंडे के आवे ख़याल
तो भागे उस आगे सिपर अपनी डाल

खड़े अरने होते हैं सिर जोड़ जोड़
कि जी कौन देता है बद बद के होड़

इताअ़त के हलक़े से भागे जो फ़ील।
पलक उसके आँखों में हो रोद नील

सो वह तो इताअ़त में इक दस्त है
नशे में मुहब्बत के सब मस्त हैं।

उसी के लिये गो कि हैं यह पहाड़
क़दम अपने रखते हैं सब गाड़ गाड़

कि शायद मुशर्रफ़ सवारी से हों
सर अफ़राज़ चलकर अमीरों से हों

चलन अब ये कुछ होवें हैवान के
तो फ़िर हक़ बजा निबहो इनसान के

किसे हो न सुहबत की उसकी हवस
चले क्या करैं जो न हो दस्त रस

इज़्जोइन्किसार मुसन्निफ़ और अर्ज़ करना दास्तान का

फ़लक बारगाहा मलक दरगहा
ज़ुदा मैं जो क़दमों से तेरे रहा।

न कुछ अक़्ल ने औ न तदबीर ने । रखा मुझ को महरूम तक़दीर ने
पर अब अक़्ल ने मेरे खोले हैं गोश । दिया है मदद से तेरे मुझ को होश
सो मैं इक कहानी बना कर नई । दुरे फ़िक्र से गूँध लड़ियाँ कई ।
ले आया हूं ख़िदमत में बहरे नयाज़ । यह उम्मेद है की रहूं सरफ़राज़ ।
मेरा उज्र तक़सीर होवे क़बूल । बहक़्क़े अली वो बआले रसूल
रहें शादो आबाद कुल ख़ैरख़्वाह । फिरैं इस घराने से दुश्मन तबाह
रहे जाहो हशमत तेरा यह मुदाम । बहक़्क़े मुहम्मद अलेहुस्सलाम
अब आगे कहानी की है दास्ताँ । ज़रा सुनिये दिल देके इसका बयाँ

आग़ाज़ दास्तान.

किसी शहर में था कोई बादशाह । कि था वह शहन्शाह गेती पनाह
बहुत हशमतो जाहो मालो मनाल । बहुत फ़ौज से अपने फ़ारख़ुदा हाल
कई बादशः उस को देते थे बाज । ख़ता वो ख़ुतन से वह लेता ख़िराज
कोई देखता आके जब उसकी फ़ौज । तो कहता कि है बहर हस्ती की मौज ।
तबेले के उस के जो अदने थे ख़र । उन्हें नालबन्दी में मिलता था ज़र
जहाँ तक कि शश्कश थे अतराफ़ के । वह उस शाह के रहते थे क़दमों लगे
रअय्यत थी आसूदः औ बेख़तर । न नामे मुफ़लिसी का न चोरी का डर
अजब शहर था उसका मीनूसवाद । कि क़ुदरत ख़ुदाई की आती थी याद
लगे थे हर इक जा पे ह्वाँ संगो ख़िश्त । हर इक कूचः उसका था रश्के बिहिश्त
ज़मीं सब्ज़ो सेराब आलम तमाम । नज़र को तरावट वहाँ सुबहो शाम
इमारत थी गच की वहाँ बेशतर । कि गुज़रे सफ़ाई से जिस पर नज़र
कहीं चाह मुंबा कहीं हौज़ नहर । हर इक जा पे आवे लताफ़त की लहर
करूं उसकी बसअत का क्या मैं बयाँ । कि जों इस्फ़ाहाँ था वह निस्फ़े जहाँ ।

हुनरमंद वा अहले हरफ़ः तमाम
हर इक अपने इल्मो अमल का था इज़दहाम

यह दिल चस्प बाज़ार था चौक का
कि ठहरे जहाँ पर वहीं दिल लगा

जहाँ तक कि रस्ते थे बाज़ार के
कहे तू कि दस्ते थे गुलज़ार के।

वह पुख़्तः मकानों के दीवारो दर
सपेदी पे जिस के न ठहरे नज़र

सफ़ा पर जो उस के नज़र कर गये
उसे देख कर संग मर मर गये।

कहूं क़िले के उसके क्या मैं शिकोह
गये देख बलिन्दी को देख उस के कोह

वह दौलत सरा रश्क़ाने चूर था।
सदा ऐशो इशरत से मामूर था

हमेशः ख़ुशी रातो दिन सैर बाग़
न देखा किसी दिल पे जुज़ लालदाग़

सदा ऐशो इशरत सदा रागो रंग
न था ज़ीस्त से अपने कोई बतंग

ग़नी वाँ हुआ जो कि आया तबाह
अजब शहर था वह अजब बादशाह

न देखा किसी ने कोई वाँ फ़क़ीर।
हुये उस के दौलत से घर घर अमीर

कहाँ तक कहूं उस का जाहो हशम
महल्लो मकाँ उस का रश्के इरम।

सदा माहरूयों से सोहबत उसे
सदा जामा ज़ेबों से रग़बत उसे।

हज़ारों परी पैकर उस के ग़ुलाम
कमरबस्तः ख़िदमत में हाज़िर मुदाम

किसी तरह का वह न रखता था ग़म
मगर एक औलाद का था अलम।

इसी बात का उसके था दिल पे दाग़
न रखता था वह अपने घर का चिराग़

दिनों का अजब उसके यह फेर था
कि उस रोशनी पर यह अंधेर था

वज़ीरों को इक रोज़ उस ने बुला
जो कुछ दिल का अहवाल था सो कहा।

कि मैं क्या करूंगा यह मालो मनाल
फ़क़ीरी का है मेरे दिल को ख़याल

फ़क़ीर अब न हों तो करों क्या इलाज
न पैदा हुआ वारिसे तख़्तो ताज

जवानी तो मेरी गई सर बसर।
नमूदार पीरी हुई सर बसर।

दरेग़ा कि अहदे जवानी गुज़श्त
जवानी मगो ज़िन्दगानी गुज़श्त

बहुत लुत्फ़ पर ग़ाफ़िल खोया किया
बहुत फ़िक्र दुनिया में सोया किया।

ग़ैहे बेतमीज़ी वा बेहासिली।
कि अज़ फ़िक्र दुनियाँ बरीं ग़ाफ़िली

वज़ीरों ने की अर्ज़ कै आफ़ताब
न हो ज़र्रः तुझको कभी इज़्तराब

फ़क़ीरी जो कीजै तो दुनिया के साथ
नहीं ख़ूब जाना उधर खाली हाथ।

करो सल्तनत लेकिन आमाल नेक
कि ता दो जहाँ में रहे हाल नेक।

जो ग़ाफ़िल हैं वह शोच में दुख रहैं
कि ऐसा न होवे कि फिर सब कहैं

हुकारे ज़मीरा निको साख़्ती
कि बर आसमाँ नीज़ पर दाख़्ती

यह दुनियाँ जो है मज़रये आख़िरत
फ़क़ीरी में जाया करो इस को मत

इबादत से इस क़िश्त को आब दो
कि हाँ जाके ख़िरमन भी तय्यार लो

रखो याद अद्ली सख़ावत की बात
कि इस फ़ैज़ से है तुम्हारी नजात।

मगर हाँ ये औलाद का है जो ग़म
सो इसका तरद्दुद भी करते हैं हम

अजब क्या कि होवे तुम्हारे ख़लफ़
करो तुम न औक़ात अपनी तलफ़

न लाओ कभी यास की गुफ़्तगू
कि क़ुरआँ में आया है लातिकनतू

बुलाते हैं हम अहले तंजीम को
नसीबों को अपने ज़रा देख लो।

तसल्ली तो दे शाह को इस नमत
चले अहले तंजीम को भेजे ख़त

नजूमी व रम्माल औ बर्हमन
ग़रज़ याद था जिन को इस ढब का फ़न

बुला कर उन्हें शाह कने ले गये
जो हैं रूबरू सब वह शाह के गये

पड़ा जब नज़र वह शहे ताज़ो तख़्त
दुआ दी कि हों शाह के बेदार बख़्त।

किया क़ायदे से ठहर कर सलाम
कहा शाह ने मैं तुमसे रखता हूं काम

निकालो ज़रा अपनी २ किताब।
मेरा है सवाल उसका लिक्खो जवाब

नसीबों में देखो तो मेरी कहीं
किसी से भी औलाद है या नहीं

यह सुनकर वो रम्माल ताला शिनास
लगे खींचने जायचे बेक़्यास ।

धरे तख़्ते आगे लिये क़ुर्आं हाथ
लगा ध्यान औलाद का उसके साथ

जो फ़ेंकी तो शक्लें कई बैठीं मिल
कई शक्ल से दिल गया उनका खिल

जमाअ़तने रम्माल के अ़र्ज़ की
किहै घर में उम्मेद की कुछ ख़ुशी

यहसुनहमसेऐ आलमोंकेशफ़ीक़
बहुत हमने तकरारकीहरतरीक़

बयाज़ अपनीदेखीजोइसरम्लकी
तोयककयेकनुक़्तःहै फ़र्दे ख़ुशी

है इसबात परइज़्तमाये तमाम
कि तालअ़ मेंफ़रज़ंदहै तेरे नाम

ज़नोज़ौज की शक्ल में है फ़रह
पिया कासये वस्लकी तू क़दह

नजूमी भी कहने लगेदरजवाब
किहमनेभीदेखीहै अपनीकिताब

नहूसतकेदिनसबगयेहैं निकल
अमलअपनासबकरचुकाहैज़ुहल

सितारोंनेतालअ़केबदलेहैं तौर
ख़ुशीकाकोईदिनमेंआता है दौर

नज़रकीजोतसदीसोतसलीसपर
तोदेखा कि है नेक सब की नज़र

किया पंडितोंनेजोअपना बिचार
तोकुछउँगलियोंपरकिया फिरशुमार

जनमपत्तिरी शाह की देखकर
तुला और वृश्चीक पर करनज़र

कहा रामजी की है तुझ परदया
चँदरमा सा बालक तेरे होयगा

निकलते हैं अब तोख़ुशीकेवचन
न हो गरख़ुशी तो नहीं वर्हमन

महाराजकेहोंगेमक़सदशिताब
किआयाहै अब पाँचवाँआफ़ताब

नसीबोंने की आप की यावरी
कि आईहै अब पाँचवीं मुश्तरी

मुक़र्रर तेरे चाहिये हो पिसर।
किदेती हैं यों अपनी पोथीख़बर

वलेकिनमुक़र्ररहै कुछ औरभी
कि हैं इस भले में बुरे तौर भी।

यहलड़कातोहोगावले क्या कहें
ख़तर है उसे बारहें बरस में।

न आयेयहख़ुरशेद बालायबाम
बलन्दीसेख़तरःहैइस को तमाम

न निकलेयहबारहबरसरश्केमह
रहैं बुर्ज में यह मेहे चरदह।

कहा सुनकेयह शाहने उनकेतईं
कहोजीकाख़तरः तोउसको नहीं

कहा जानकी सब तरह ख़ैर है
मगरदस्तग़ुरबतकी कुछ सैर है

कोईउसपेआशिक़होजिन्नोपरी
कोई उसका माशूक़ हो इस्तरी।

कुछ ऐसा निकलता है पोथी में अब
ख़राबी हो उस पर किसी के सबब।

हुई कुछ ख़ुशी शाह को कुछ अलम
कि दुनियाँ में तो अम्र है शादी व ग़म

कहा शाह ने इस पर नहीं इख़्तियार
जो चाहे करै मेरा परवर्दिगार।

यह फरमा महल में दरामद हुए
मुनज्जिम वहाँ से बरामद हुये।

ख़ुदा पर ज़ियादः अब को था एतक़ाद
लगा माँगने हक़ से अपनी मुराद

ख़ुदा से लगा करने वह इल्तिजा।
लगा आप मसजिद में रखने दिया

निकाला मुरादों का आख़िर सुराग़
लगाई उधर लव तो पाया चिराग़

सहावे करम ने किया जो असर
हुई किश्त उम्मेद की बार वर

उसी साल में यह तमाशा सुनो
रहा हम्ल इक ज़ौजये शाह को

जो कुछ दिल पै गुज़रे थे रंजो तअब
मुबद्दल हुये वह ख़ुशी साथ सब

दास्तान तवल्लुद होने शाहज़ादे बेनज़ीर की.

ख़ुशी से पिला मुझ को साक़ी शराब
कोई दिन में बजता है चंगो रबाब

करूं नग़मये तहनियत का शुरूअ
कि इक ने क अख़्तर करै है तुलूअ

गये नौ महीने जो उस पर गुज़र
हुआ शाह के घर में तवल्लुद पिसर

अजब साहिबे हुस्न पैदा हुआ
जिसे महरो मह देख शैदा हुआ

नज़र को न हो हुस्न पर उस के ताब
उसे देख बेताब हो आफ़ताब

हुआ वह जो उस शक्ल से दिल पिज़ीर
रखा नाम उस का शहे बेनज़ीर।

ख़वासों ने ख़्वाजःसराओं ने जा
कई नज़रैं गुज़रानियाँ और कहा

मुबारक तुझे ऐ शहे नेक बख़्त
कि पैदा हुआ वारिसे ताजो तख़्त

सिकन्दर नज़ाद और दारा हशम
फ़लक मर्तबत और उतारिद रक़म

रहे उस के अक़्लीम ज़ेरे नगीं
ग़ुलामी करैं उस के ख़ाक़ान चीं

यह सुनते ही सुज़्दः विछा आनमाज़
किये लाख सिज्दे किये बेनयाज़।

तुझे फ़ज़्ल करते नहीं लगती बार न हो तुझ से मायूस उम्मेदयार।
हुगाना ग़रज़ शुक्र का कर अदा तहइया किया शाह ने जश्न का
वह नज़रें ख़वासों की ख़्वाजों की ले उन्हें ख़िलअ़तो ज़र का इनआ़म दे
कहा हो जाओ जो कुछ कि दरकार हो कहो ख़ानसामाँ से तइयार हो।
नक़ीबों को बुलवा के यह कह दिया कि नक़्क़ारख़ाने में दो हुक्म जा
कि नौबत ख़ुशी की बजावें तमाम ख़बर सुन के यह शादहों ख़ासो आ़म
यह मुज़्दह जो पहुँचा तो नक़्क़ारची लगा हरजगह बादला औ ज़री।
बना ठाठ नक़्क़ारख़ाने के सब मुहइया कर असबाब ऐशो तरब
गिलाफ़ उनपै बानात पुरज़र के डाँक शिताबी से नक़्क़ारों को सेंक साँक
दिया ज़ीर को पहिले बम से मिला लगी फैलने हर तरफ़ को सदा।
कहा ज़ीर ने बम से बहरे शगूँ कि डूँडूं ख़ुशी की ख़बर क्यों न दूं
बजे शादियाने जो वाँ उस घड़ी हुई गिर्दी पेश आके ख़िल्क़त खड़ी
बहम मिल के बैठे जो शहनानवाज़ बना मुँह से फिर की लगा उसपै साज़
सरों पर वह सरपेच मामूल के। ख़ुशी से हुये गाल गूल फूल के
लगे लेने उपजें ख़ुशी से नई अराना लगा बजने और उस घड़ी
ठकोरों में नौबत की शादी की धुन सुघड़ सुन्ने वालों के कहते थे सुन
तुरही और करनाय शादी के दम लगे भरने ज़ील और ख़रज में बहम
सुनी झाँज ने जो ख़ुशी की नवा थिरकने लगा तालियों को बजा
नये शिर से आलम को इशरत हुई कि लड़के की होने की नौबत हुई
महल से लगा ताबे दीवान आम अजब तरह का इक हुआ इज़्दहाम।
चले लेके नज़रें अमीरो वज़ीर लगे खींचने ज़र के तूदे फ़क़ीर
दिये शाह ने शाहज़ादे के नाउँ मशायख़ को और पीरज़ादों को गाउँ
अमीरों को जागीर लश्कर को ज़र वज़ीरों के इलमास लालो गुहर।

ख़वासों को ख़ोजों को जोड़े दिये
पियादे जो थे उन को घोड़े दिये।

खुशी से किया यों तलक ज़र निसार
जिसे एक देना था बख़्शे हज़ार

किया भाँड़ और भक्तियों ने हुजूम
हुई आहे आदे मुबारक की धूम

लगा कंचनी चूनः पज़नी तमाम
कहाँ तक मैं लूं नृत्तकारों का नाम

जहाँ तक कि साज़िन्दे थे साज़ के
धनी दस्त के और आवाज़ के

जहाँ तक किये गायकों रहतकार
लगे गाने और नाचने एक बार

लगे बजने क़ानून बीनो रुबाब
वहा हर तरफ़ जूय इशरत का आब

लगी थाप तबलों की मिरदंग की
सदा ऊँची होने लगी चंग की

कमाँचों को सारंगियों को बना
खुशी से हर इक उनकी तरबें मिला

लगा मोम तारों पे मुरचंग के
मिला सुर तँबूरों के मिरदंग के।

सितारों के परदे बना कर दुरुस्त।
बजाने लगे सब वह चालाको चुस्त

गई बायें की आसमाँ तक गुमक
उठा गुंबदे चर्ख़ सारा धमक

खुशी की ज़िबस हर तरफ़ थी बिसात
लगे नाचने उस पे अहले निशात।

कनारी के जोड़े चमकते हुवे
वह पाओं के घुँघरू भनकते हुवे

वह बाले चमकते हुये कान में
फड़कना वह नथुने का हर आन में

वह घटना व बढ़ना अदावों के साथ
दिखाना वह हर रख २ के छाती पे हाथ

कभी दिल को पाओं से मल डालना
नज़र से कभी देखना भालना

दिखाना कभी अपनी छबि मुसक्करा।
कभी अपनी अँगिया को लेना छिपा

किसी के चमकते हुये नौ रतन।
किसी के वह मुखड़े पै नथ की फबन

वह दाँतों की मिस्सी वह गुल बर्ग तर।
शफ़क़ में अयाँ जैसे शामो सहर

वह गरमी थी चेहरे की ज्यों आफ़ताब
जिसे देख कर दिल को हो इज़तराब

चमकना गुलू का सफ़ा के सबब।
वह गरदन के डोरे क़यामत ग़ज़ब

कभी मुँह के तईं फेर लेना उधर
कभी चोरी चोरी से करना नज़र

दुपट्टे को करना कभी मुँह के ओट | कि पर्दे में होजाय दिल लोट पोट।
हरइक तान में उनको अरमान यह | कि दिल लीजिये तान की तान यह
कोई फ़न में संगीत के शोलअ़ रू | बरम योग लक्ष्मी लिये परमलू
कोई डेढ़ गतिही में पाँवों तले | खड़ी आशक़ों के दिलों को मले
कोई दायरे में बजा कर परन। | कोई दम्दमे में जता अपना फ़न
ग़रज़ हर तरह दिल को लेना उन्हें | नई तरह से दाग़ देना उन्हें।
कभी मार ठोकर करैं क़त्ल आम | कभी हाथ उठा लेवैं गिरतों को थाम
कहीं धुरपद औ गीत का शोरो ग़ुल | कहीं क़ौलो कल्यान औ नक़्शो ग़ुल
कहीं भाँड़ और लूलियों का समाँ | कहीं नाच कश्मीरियों का वहाँ।
मजीरा परवावज गले डालि ढोल | बजाते थे उस जा खड़े बाँधे ग़ोल
महल में जो देखा तो इक इज़्दहाम | मुबारक सलामत की थी धूम धाम
परी पैकरों का हरइक जा हजूम। | वहाँ भी पड़ी ऐशो इशरत की धूम
छठी तक ग़रज़ थी ख़ुशी की ही बात | कि दिन ईद और रात थी शब्बरात
बढ़े अबही अब्र में ज्यों हिलाल | महल में लगा पलने वह नौ निहाल
बरस गाँठ जिस साल उस की हुई | दिले बस्तगाँ की गिरह खुल गई
वह गुल जब कि चौथे बरस में लगा | बढ़ाया गया दूध उस माह का
हुई थी जो कुछ पहले शादी की धूम | उसी तरह से फिर हुआ वाँ हजूम
तवायफ़ वही और वही रागो रंग | हुई बल्कि दूनी ख़ुशी की तरंग
वह गुल पाँउ से अपने जिस जा चला | वहाँ आँख को नरगिसों ने मला
लगा फिरने वह सर्व सब पाँउ पाँउँ | किये बुर्दे आज़ाद तब उस के नाँउ

दास्तान तय्यारी में बाग़ के.

मये अरग़वानी पिला साक़िया | कि तामीर को बाग़ के दिल चला

दियाशाह नेतरतीबइक ख़ानःबाग़ हुआ रश्कमें जिसके लालःकोदाग़
इमारतकी ख़ूबीदरोंकी वहशान लगे जिसमें ज़रबफ़्त के सायबान।
चिकें और परदे बँधे ज़र निगार दरों पर खड़ी दस्तबस्तः बहार।
कोई दूर से दर पै अटका हुआ कोई ज़ेह पै ख़ूबी से लटका हुआ
वह मुक़ेश की डोरियाँ सर बसर कि महका बँधा जिस में तारे नज़र
चिकोंका तमाशाःथा आखोंका जाल निगह को यहाँ से गुज़रना मुहाल।
सुनहरी मुग़र्रक़ छतें सारियाँ। वह दीवार और दर की गुलकारियाँ
दिये हर तरफ़ आइने जो लगा गया चौगुना लुत्फ़ उस में समा
वहमख़्मलका फ़र्शउसकेसुथराकेबस चढ़े जिस के आगे न पाये हवस
रहेंलख़लख़े उसमेंरोशन मुदाम मुअत्तर शबो रोज़ जिस से मशाम
छपरखट मुरस्सा का दालान में चमकता था इस तरह हर आन में
ज़मींपरथी इस तौरउस की झमक सितारोंकीजैसी फ़लक पर चमक
ज़मींका करूं उसके क्या मैं बयाँ कि सन्दल का इक पारचा था अयाँ
बनी संगमरमरकी चौपड़कीनहर गई चारसू उसके पानी की लहर
क़रीने से गिर्द उसके सर्वो सेही कुछ इक दूर दूर उस से सेबो बिही
कहूं क्या मैं कैफ़ीयते दारो बस्त लगाये रहें ताक वाँ मय परस्त
हयाये बहारी से गुल लहलहे चमन सारे शादाब और डहडहे
ज़मुर्रद के मानिन्द सब्ज़े का रंग रविश परजवाहिर लगा जैसे संग
रविश की सफ़ाई पै बे इख़्तियार गुले अशरफ़ी ने किया ज़र निसार
चमन से भरा बाग़ गुल से चमन कहीं नरगिसोगुल कहींया समन
चँबेलीकहींऔरकहीं मोतिया कहींरायबेल और कहीं मोगरा
खड़े शाख़ शब्बूकेहरजा निशान मदन बानकी औरही आनबान
कहीं अरग़वाँऔर कहींलालःज़ार जुदीअपनीमौसम मेंसब की बहार

कहीं जाफ़रीं और गेंदा कहीं	समा शब को दाऊदियों का कहीं
अजब चाँदनी में गुलों की बहार	हरइक गुलसफ़ेदी से महताब वार।
खड़े सर्व की तरह चम्पे की झाड़	कहे तू कि खुशबूइयों की पहाड़
कहीं ज़र्द नसरी कहीं नस्तरन	अजब रंग पर जाफ़रानी चमन।

तसवीर बाग़ मय मकान.

पड़े आबजू हर तरफ़ को बहे	करें क़ुमरियाँ सर्व पर चहचहे
गुलों का लबे नहर पर झूमना	उसी अपने आलम में मुँह चूमना
वह झुक झुक के गिरना खयाबान पर	नशे का सा आलम गुलिस्तान पर
लिये हाथ में बेलचे मालिने।	चमन को लगी देखने भालने
कहीं तुख्म पाशी करें गोड़ कर	पनीरी जमावें कहीं खोद कर
खड़े शाखदर शाख बाहम निहाल	रहीं हाथ जो मस्त गरदन में डाल

लबे जूँ पे आईने में देख क़द | अकड़ना खड़े सर्व का जद न तद
ख़िरामाँ सबा सहन में चारसू | दिमाग़ों को देती हर इक गुल की बू
खड़े नहर पर कांज़ औ क़र्क़रे | लिये साथ मुर्ग़ाबियों के परे।
सदा क़र्क़रों की बुतों का वह शोर | दरख़्तों पै बगुले मुंडेरों पै मोर
चमन आतशे गुल से दहका हुवा | हवा के सबब बाग़ महका हुवा
सबा जो गई डेरियाँ कर के भूल | पड़े हर तरफ़ मोलसिरियों के फूल
वह केलों की औ मोलसिरियों की छाउँ | लगी जाय आँखें लिये जिसका नाउँ
ख़ुशी से गुलों पर सदा बुलबुलें | तअश्शुक़ की आपस में बातें करें
दरख़्तों ने बर्गों के खोले वरक़ | किलें तूतियाँ बोस्ताँ का सबक़
समा क़ुमरियाँ देख उस आन का | पढ़ें बाब पंजुम गुलिस्तान का।
दद्दा दाइयाँ औ मुग़लानियाँ | फिरें हर तरफ़ उस में ज़िलवः क़ुना
ख़वासों का औ लौंडियों का हजूम | महल की वह चुहलें वह आपस का धूम
तकल्लुफ़ के पहने फिरें सब लिबास | रहें रातो दिन शाहज़ादे के पास
कनीज़ाने महरू की हर तर्फ़ रेल | चँबेली कोई औ कोई राय बेल
रंगीली कोई औ कोई श्याम रूप | कोई चितलगन औ कोई काम रूप
कोई केतकी और कोई गुलाब | कोई महरतन औ कोई माहताब
कोई सेवती और हंस मुख कोई | कोई दिल लगन और तन सुख कोई
इधर और उधर आतियाँ जातियाँ | फिरें अपने जोबन को दिखलातियाँ
कहीं अपने पट्टे सँवारे कोई | अरी औ रसीली पुकारें कोई
कहीं चुटकियाँ औ कहीं तालियाँ। | कहीं क़हक़हे औ कहीं गालियाँ
बजाती फिरें कोई अपने कड़े | कही वाह वाह औ कहीं वा छड़े
दिखावे कोई गोखरू मोड़ मोड़ | कहीं सूत बूटी कहीं तार तोड़
अदा से कोई बैठि हुक़्क़ा पिये | दमे दोस्ती कोई भर भर जिये

कोई हौज़ में जाके ग़ोता लगाय
कोई नहर पर पाऊं बैठी हिलाय

कोई अपने तोते को लेवे ख़बर
कोई अपने मैना पै रक्खे नज़र

किसी को कोई धौल मारे कहीं
कोई जान को अपने वारे कहीं

कोई आरसी अपनी आगे धरै
अदा से कहीं बैठि कंघी करै।

सुफ़ावा कोई खोल मिस्सी लगाय
लबों पर धड़ी कोई अपने जमाय

हुआ उन गुलों से दुबाला समाँ
उसी बाग़ में था वह सर्वे रवाँ

ग़रज़ लोग थे यह ज़ोहर काम के
यह सब वास्ते उसके आराम के।

पला जब वह इस नाज़ो न्यामत के साथ,
पदर और मादर के शफ़क़त के साथ

हुई उसके मकतब की शादी अयाँ
हुआ फिर उसी शादियों का समाँ

मुअल्लिम अतालीक़ मुंशी अरीब
हर इक फ़न के वस्ताद बैठे क़रीब।

किया क़ायदे से शुरू सक लाम
पढ़ाने लगे इल्म उस को तमाम

दिया था ज़िवसहक़ ने ज़ेहने रसा
कई साल में इल्म सब पढ़ चुका।

मआनी वो मंतिक़ बयानो अदब
पढ़ा उसने मंक़ूल माक़ूल सब

ख़बरदार हिकमत के मज़मून से
ग़रज़ जो पढ़ा उसने क़ानून से

लगा हय्यतो हिन्दसा तानजूम
ज़मीं आसमाँ में पड़ी उसकी धूम

किये इल्म नोके ज़बाँ हर्फ़ हर्फ़
इसी नह्व से उस ने की उम्र सर्फ़

उतारिद को आने लगी उसकी रीस
हुवा साद:लौही में वह ख़ुशनवीस

हुवा जब कि नवख़त वह शीरीं रक़म
पढ़ा कर लिखे सात से नौ क़लम

लिया हाथ जब ख़ामसे मुश्कबार
लिखा नसरवो रैहानो ख़त्ते ग़ुबार

अरूसुल ख़तूत और सुल्सो रक़ाअ
ख़फ़ी और जली मिस्ल ख़त्ते शुआअ

शिकस्त: लिखा और तालीक़ जब
रहे देख हैराँ अतालीक़ सब

किया ख़त्त गुलज़ार से जब फ़राग़
हुवा सफ़हे क़ातअ गुलज़ार बाग़।

करूं इल्म उसका कहाँ तक अयाँ
कि है ख़ूब अब मुख़्तसिर यह बयाँ।

कमी के जो दर पै हुआ बेनज़ीर
लियासवींचि चिह्ले में सब फ़न्न तीर
सफ़ाई में ख़फ़ार पे का किया
किया जब कि तहः यह तूफ़ाँ किया
रखा छूटतेही जो लकड़ी पै मन
किया अपने कब्ज़े में सब उसका फ़न
हुई दस्तों बाज़ू की सरसाइयाँ
उड़ाई कई हाथ में घाइयाँ।
रखा मूसक़ी पर जो कुछ र ख़याल
किये क़ैद सब उसने हाथों में ताल
तबीअत गई कुछ जो तसवीर पर
रखे रंग सब उस के मद्दे नज़र।
कई दिन में सीखा यह क़स्बे फ़िरंग
कि हैराँ हुये देख अहले फ़िरंग
सिवा इन कमालों के कितने कमाल
मुरव्वत की ख़ू आदमीयत की चाल
रिज़ालों से नफ़रों से नफ़रत उसे
सदा क़ाबिलों से है सुहबत उसे
गया नाम पर अपने वह दिल पिज़ीर
हरेक फ़न में सचमच हुआ बेनज़ीर

दास्तान सवारी की तैयारी के हुक्म में.

पिला साक़िया मुझको इक जाम मुल
जवानी पै आया है अइयाम गुल
ग़नीमत असुर सुहबते दोस्ताँ
कि गुल पंज रोज़स्त दर बोस्ताँ।
समर ले भलाई का गर हो सके
शिताबी से बोले जो कुछ बो सके
कि रंगे चमन पर नहीं एतबार
यहाँ चर्ख़ पर है ख़िज़ानो बहार
पड़ी जब गिरह बारवें साल की
ख़ुली गुल घड़ी ग़म के जंजाल की
कहा शह ने बुलवा नक़ीबों को शाम
कि हों सुबह हाज़िर सभी ख़ासो आम
सवारी तक़ल्लुफ़ से तइयार हो
मुहइया करें जो कि दरकार हो।
करें शहर को मिल के आइनः बंद
सवारी का हो लुत्फ़ जिससे दोचंद
रअय्यत के ख़ुश हों सग़ीरो कबीर
कि निकलेगा कल्ह शहर में बेनज़ीर
यह फ़रमा महल में गये बादशाह
नक़ीबों ने सुन हुक्म लो अपनी राह
हुई शब लिया मह ने ज़ा में शराब
गया सिज़दये मुश्क में आफ़ताब।

ख़ुशी में गई जल्द शबजो गुज़र हुई सामने से जुमाया सहर
अजब शब थी वह जो सहर रूसपेद अजब रोज़ था मिस्ल रोज़े उमेद
गया मुज़दहे मेहर ले माहताब उठा सूर्य आँखों को मलता शिताब
कहा शाह ने अपने फ़रज़न्द को कि बाबा नहा धो के तय्यार हो

दास्तान हम्माम में नहाने की लताफ़त में.

पिला आतशी आब पीरे मुग़ाँ कि भूले मुझे गर्मी सरदे जहाँ
अगर चाहता है मेरे दिल को चैन न देना वह सागर जो हो क़िल्लतैन
कुदूरत मेरे दिल की धो साक़िया ज़रा शीशये मय को धोधा के ला
कि सर गर्म हम्माम है बेनज़ीर गया है नहाने को बदरे मुनीर।
हुआ जब कि दाख़िल वह हम्माम में अरक़ आ गया उसके अन्दाम में।
तने नाज़नी नम हुआ उसका कुल कि जिस तरह डूबे है शबनम में गुल
परस्तार बाँधे हुये लुंगियाँ। मह्रो मेहर से तास लेकर वहाँ
लगे मलने उस गुलबदन का बदन हुआ डहडहा आपसे वह चमन
नहाने में यों थी बदन की दमक बरसने में बिजली की जैसे चमक
लबों पर जो पानी पड़ा सरबसर नज़र आये जैसे दो गुल बर्गतर
हुआ क़तरे आब यों चश्मबोस कहे तो पड़ी जैसे नरगिस पे ओस
लगा होने ज़ाहिर जो रंगे जाज़ हुस्न टपकने लगा उससे अन्दाज़ हुस्न
गया हौज़ में जब शहे बेनज़ीर पड़ा आब में अक्से माहे मुनीर
वह गोरा बदन और बाल उसके तर कहें तू कि सावन की शामो सहर
नमी से था बालों का आलम अजब न देखी कोई ख़ूब तर उस से शब
कहूं उसकी ख़ूबी की क्या तुमसे बात कि ज्यूं भीगती जाय सुहबत में रात
ज़मीं पर था इक मौज ये नूर रेज़। हुआ जब वह फ़व्वारः साँ आबरेज़

ज़मुर्रद की ले हाथ में संग पा
किया ख़ादिमों ने जो आहंग पा
हँसा खिलखिला वह गुले नौबहार
लिया खींच पावों के बेइख़्तियार
अजब आलम उस नाज़नी पर हुआ
असर गुदगुदी का जबीं पर हुआ
हँसा उस अदा से कि सब हँस पड़े
हुये जी से क़ुर्बान छोटे बड़े।
दुआयें लगे देने बे इख़्तियार।
कहा ख़ुश रखे तुझको परवरदिगार
कि तेरी ख़ुशी से है सब की ख़ुशी
मुबारक तुझे रोज़ो शब की ख़ुशी
न आवे कभी तेरे ख़ातिर पे मैल
चमकता रहे वह फ़लक का सुहेल
किया ग़ुस्ल जब इस लताफ़त के साथ
उढ़ा खेस लाये उसे हाथों हाथ
नहा धो के निकला वह गुल इस तरह
कि बदली से निकले है मह जिस तरह
ग़रज़ शाहज़ादे को नहला धोला
दिया ख़िलअते ख़ुश ख़्वानः पिन्हा
जवाहिर सरासर पिन्हाया उसे
जवाहिर का दरिया बनाया उसे।
कड़े कंगन और कलग़ी और रतन
किया रश्क से यक ज़ेबे बदन।
मुरस्सा का सरपेच जों मौजे आब
मुनव्वर बशक्ले रुख़े आफ़ताब
वह मोती के बाले बसद ज़ेबो ज़ैन
कहें जिसको आराम जाँ दिल का चैन
जवाहिर का तन पर अजब था ज़हूर
कि इक २ अदद उसका था कोहेनूर।
ग़रज़ हो के इस तरह आरास्तः
ख़िरामा हुआ सर्वे नौख़ास्तः।
निकल घर से जिस दम हुआ वह सवार
किये ख़ान गौहर के उस पर निसार
ज़िबस था सवारी का बाहर हुजूम
हुआ जब कि डंका पड़ी सब में धूम
बराबर बराबर खड़े थे सवार।
हज़ारों ही थीं हाथियों की क़तार
सुनहरी रुपहली वह अम्बारियाँ
शबो रोज़ की सी तरह दारियाँ
चमकते हुए बादलों के निशान
सवारों के गहने और बानों की शान
हज़ारों ही अतराफ़ में पालकी
झलाबोर की जगमगी नालकी।
कहारों की ज़रबफ़्त की कुरतियाँ
और उनके दबे पावों की फुरतियाँ

तसवीर सवारी शाहज़ादे बेनज़ीर जानिब बाग़ ॥

बँधी पगड़ियाँ ताश की शिर ऊपर — चकाचौंध में जिससे आवे नज़र

वह हाथों में सोने के मोटे कड़े । — झलक जिसकी हर हर क़दम पर पड़े

वह माही मरातिब वह सरवे रवाँ — वह नौबत का दूलह का जैसे समाँ ।

वह शाहनाइयों की सदा ख़ुशनुमाँ । — सुहानी वह नौबत की आवे सदा

वह आहिस्तः घोड़ों पै नक्कारची — क़दम बा क़दम बालिबा से ज़री ।

बजाते हुये शादयाने तमाम, । — चले आगे आगे मिले शाद काम

सवार और पियाद: सग़ीरो कबीर
जिलो में तमाशी अमीरो वज़ीर

वह नज़रें कि जिस जिसने थी ठानियाँ
शहो शाहज़ादे को गुज़रानियाँ।

हुये हुक्म से शाह के फिर सवार
चले सब क़रीने से बाँधे क़तार।

सजे औ सजाये सभी ख़्वासो आम
लिबासे ज़री में मुलब्बिस तमाम।

तुरक़ के तुरक़ा औ परे के परे
कुछ ईधर उधर कुछ वरे कुछ परे

मुरस्सअ़ के साज़ों से कोतल समन्द
कि ख़ूबी ने रख्खुल क़ुदस से दोचन्द

वह फ़ीलों की औ मेगडंबर की शान
झलकते वह मुक़ेश के साइबान।

चले पाइये तख़्त के हो क़रीब
बदस्तूर शाहान नयती ज़रीब

सवारी के आगे पय अहितमाम
लिये सोने रूपे के आसे तमाम।

नक़ीब और ज़िलोदार और चोपदार
वह आपस में कहते थे हरदम पुकार

उसी अपने मामूली दस्तूर से।
अदब से तफ़ावत से और दूर से

भलानो जवानो बढ़े जाइयो।
दोजानिब से बाग़ें लिये आइयो

बढ़े जाय आगे से चलते क़दम
बढ़े उमरो दौलत क़दम बा क़दम

ग़रज़ इस तरह से सवारी चली
चले है कि बादे बहारी चली।

तमाशाइयों का जुदा था हजूम
कि हरतर्फ़ थी लाख आलम की धूम

लगा क़िलआ से शहर की हद तलक
दुकानों पै थी बादले की झलक।

मढ़े थे तमामी से दीवारो दर।
तमामी था वह शहर सोने का घर

किया था ज़िबस शहर आइन: बन्द
हुआ चौक का लुत्फ़ बा चार चन्द।

रइअ़्यत की कसरत हजूमे सिपाह।
गुज़रती थी रुक २ के हर आँ निगाह

हुये जमअ़् कोठों पै जो मर्दो ज़न।
हर इक सतह था जो ज़मीने चमन

पै ख़्वालिक़ की हुस्न क़ुदरत के कामिल:
तमाशे को निकली ज़ने हामिल:

लगा लुंज से ता ज़यीफ़ो नहीफ़
तमाशे को निकले वज़ीफ़ो शरीफ़

वह शोतयोरों तलक बेख़लल।
पड़े आशियानों से अपने निकल

न पहुँचा जो यक मुर्ग़ ख़िबल: नुमा
सो वह आशियाने में तड़पा किया।

ग़रज़ शाहज़ादा बहुत था हसीन
हुये देख आशिक़ कहीं नो महीन।

नज़र जिसको आया वह माहे तमाम
किया उसने झुक झुक के उसको सलाम

दुआ शाह को दी कि यारे इलाह
सदा यह सलामत रहे मह्‌रो माह

यह ख़ुश अपने मह्‌से रहे शहरयार
कि रौशन रहे शहर परवर्दिगार।

ग़रज़ शहर से बाहर यक सिम्त को
कोई बाग़ था शह का उसमें से हो

घड़ी चार तक ख़ूब सी सैर कर
रअय्यत को दिखला के अपना पिसर

उसी कसरते फ़ौज से हो सवार
फिरा शहर की तर्फ़ वह शहरयार

सवारी को पहुँचा गई फ़ौज उधर
गये अपने मंज़िल में शमसो क़मर

जहाँ तक की थीं ख़ादिमाने महल
ख़ुशी से वह डेवढ़ी तक आईं निकल

क़दम अपने हज़रतों से बाहर निकाल
लिया सब ने आ पेशवा हाल हाल

बलायें लगीं लेने सब एक बार
किया जी को एक दस्त सब ने निसार

गया जब महल में वह सर्वे रवाँ
बँधा नाच और राग का वाँ समा।

पहर रात तक पहिने पोशाक वह
रहा साथ सब के तरब नाक वह

क़ज़ारा वह शब थी शबे चार दह
पड़ा ज़िलवा लेता था हर तर्फ़ मह

नज़ारे से था उसके दिल को सरूर
अजब आलम में नूर का था ज़हूर

अजब लुत्फ़ था सैर महताब का
कहे तू कि दरया था सीमाब का

हुआ शाहज़ादे का दिल बेक़रार
यह देखी जो वाँ चाँदनी की बहार

कुछ आई जो उस मह के जी में तरंग
कहा आज कोठे पै बिछे पलंग

ख़वासों ने जा शाह से अर्ज़ की
कि शाहज़ादे की आज यों है ख़ुशी

इरादा है कोठे पै आराम का
कि भाया है आलम लबे बाम का

कहा शाह ने अब तो गये दिन निकल
अगर यों है मरज़ी तो क्या है ख़लल

पर इतना है उस से ख़बरदार हों
जिन्हों की हो चौकी वह बेदार हों

ग़रज़ ले गई आन की आन में। उड़ाकर वह उसको परिस्तान में।
कभी ख़ुश है दिल और कभी दर्दमंद ज़माने की जैसी है पस्तो बलंद।

तसवीर उड़ा ले जाने परी की शाहज़ादे को.

दास्तान हालत तबाह करने मा बाप की शाहज़ादे के ग़ायब होने से.

शिताबी से ऐ साक़िया दे शराब कि यह हाल सुनकर हुवा दिल कबाब
यहाँ को तो क़िस्सा में छोड़ा यहाँ ज़रा अब सुनो ग़मज़दों का बयाँ
करूं हाल हिज्रज़दों का रक़म कि गुज़रा जुदाई से क्या उनपे ग़म
ख़ुली आँख जो एक की वाँ कहीं तो देखा कि वह शाहज़ादा नहीं

न है वह पलँग और न वह माहरू
न वह गुल है उसका न वह उसकी बू

रहे देख यह हाल हैरान कार
कि यह क्या हुआ हाय परवर्दिगार

कोई देख यह हाल रोने लगी
कोई ग़म से जी अपना खोने लगी

कोई बलबलाई सी फिरने लगी
कोई ज़ोफ़ खा खा के गिरने लगी

कोई सिर पै रख हाथ दिलगीर हो
गई बैठ मातम की तसवीर हो

कोई रख के ज़ेरे ज़नख़दाँ छड़ी।
रही नरगिस आसा खड़ी की खड़ी

रही कोई उंगली को दाँतों में दाब
किसी ने कहा घर हुआ यह ख़राब

किसी ने दिये खोल संबुल से बाल
तमाचों से जो गुल किये सुर्ख़ गाल

न बन आई कुछ उनको इसके सिवा
कि कहिये यह अहवाल अब शह से जा

सुनी शह ने आख़िरकार जब यह ख़बर
गिरा ख़ाक पर कह के हाये पिसर

कलेजा पकड़ मा तो बस रह गई
कली की तरह से बिकस रह गई

हुआ गुम जो यूसुफ़ पड़ी यह जो धूम
किया ख़ादिमाने महल ने हजूम।

कहा शह ने वाँ का मुझे दो पता
अज़ीज़ो जहाँ से वह यूसुफ़ गया

गई ले वह शह को लबे बाम पर
दिखाया कि सोया था वह सीमबर

यही थी जगह वह जहाँ से गया
कहा हाय बेटा तु याँ से गया।

मेरे नौजवाँ मैं कहाँ जाऊँ पीर
नज़र तू ने मुझ पर न की बे नज़ीर

अजब बहरे ग़म में डुबोया मुझे
ग़रज़ जान से तू ने खोया मुझे

करूं इस क़यामत का क्या मैं बयाँ
तरक़्क़ी में हरदम था शोरो फ़िग़ाँ

लबे बाम कसरत जो यक सर हुई
तले की ज़मीं सारी ऊपर हुई

शब आधी वह जिस तरह सोते कटी
रही थी जो बाक़ी वह रोते कटी।

अजब तरह की शब थी है हात वह
क़यामत का दिन था न थी रात वह

सहर ने किया जब गरेबान चाक।
उड़ाने लगे मिल के सब सिर पे ख़ाक

उठा शहर में हर तरफ़ शोरो ग़ुल
कि ग़ायब हुआ इस चमन से वह गुल

ग़मो दर्द से दिल जो सबका भरा हुआ बाग़ सारा वह मातम सरा
गया जब कि वह सर्व उस बाग़ से नज़र फूल आने लगे दाग़ से।
अकड़ना गये सर्व सब अपना भूल उड़ाने लगीं क़ुमरियाँ शिर पै धूल
नदा अब जो कोई उन्हों की सुने तो कूकू से उन के ज़िगर तक भुने
हुये खुश्क और ज़र्द सारे निहाल समर लग के यावों हुये पायमाल
तराने से बुलबुल का जी हट गया गुलों का जिगर दर्द से फट गया
तबस्सुम गया हिज्र से ग़ुंचा भूल हुआ ग़म से अज़बस लहू पीके फूल
उड़ा नूर नरगिस की आँखों का सब हुवे बाल संबुल के मातम के शब
लबे जू के उड़ने लगा गिर्द गर्द गुले अशरफ़ी का हुआ रंग ज़र्द
लगी आग लाले के दिल को तमाम दिया ख़ाक में फेंक इशरत का जाम
पड़ा मातम उस बाग़ में बस कि सख़्त हुवे नख़ल मातम तमामी दरख़्त
गिरे ग़म से अंगूर मद होश हो पड़े सारे साये सियह पोश हो
लगे थे जो पत्ते दरख़्तों के साथ वह हिल २ के मलते थे आपुस में हाथ
वह लबरेज़ जो नहर थी जाबजा सो आँखों की वह रह गई डबडबा
उछलते थे फ़व्वारे जो उसके वाँ गया सब निकल उनका तावो तवाँ
मिज़ह पर जो कुछ अश्क थे झड़ गये ग़रज़ रोते रोते गढ़े पर गये।
हुवा हाल चश्मों का याँ तक तबाह किया सब्ज़ पानी से अपना सियाह
कहाँ वह कुयें और कहाँ आबशार कोई दिल में रोती कोई ढाड़ मार।
न बगलों का आलम न वह क़ुरक़ुरे न वह आब जूयें न सब्ज़े हरे।
जहाँ रक़्स करते थे ताऊस बाग़ लगे बोलने व्हाँ मुड़ेरों पै ज़ाग़।
सुहानी वह छायें जो दिलचस्प थीं सो क्या हो कि अब दिल लगे वाँ नहीं
सुनहक़श जहाँ थे वह रंगी मकाँ हुवे सब वह जो दीद्ये ख़ूच काँ।
गुलों की तरह खिल रहे थे जो दिल सो वह सब ख़िज़ाँ से हुये मुज़महिल

ख़िज़ां का अलम दिल में जो आ भड़ा। जिगर बर्ग गुल की तरह भड़ पड़ा।
न गुंचा न गुल ने गुलिस्ताँ रहा फ़क़त दिल में इक ख़ार हिजरा रहा
वज़ीरों ने देखा जो अहवाल शाह कि होती है अब इसकी हालत तबाह
कहा गो जुदाई गवारा नहीं वलेकिन जुदाई से चारा नहीं
नहीं ख़ूब इतना तुम्हें इज़तराब नसीबों ने शायद मिलै वह शिताब
ख़ुदा जाने अब इस में क्या भेद है यह कहते हैं जीतों को उम्मेद है
ख़ुदा की ख़ुदाई तो मामूर है। ग़रज़ उसके नज़दीक़ क्या दूर है
नहीं एक सूरत पे कोई मुदाम उसी की ग़रज़ ज़ात को है क़याम
यह कह और शह को बिठा तख़्त पर वह रनो अरहने लगे यक दिगर
लुटाया बहुत बाप ने मालो ज़र वलेकिन न पाई कुछ उस की ख़बर

दास्तान परिस्तान में ले जाने की.

मुझे देके मै खोज उस का बता ज़रा खिज़्र रह हो तुही साक़िया
न पाई कहीं याँ जो उस गुल की बू करूं अब परिस्तान में जुस्तजू
उड़ी जो परी वाँ से लेकर उसे उतारा परिस्ताँ के अन्दर उसे।
वहाँ एक था सैर का उसके बाग़ कि जिसके गुलों से हो ताज़ा दिमाग़
रियाही नो गुल उस में अनवाअ के तिलिस्मात कुल उस में अनवाअ के
तिलिस्मात के सारे दीवारो दर न याँ कैसे कोठे न याँ कैसे घर
मुतल्ला मुनक़्क़श मुशब्बक तमाम यह क्या हो जो हो धूप का उस में नाम
गिरे छन के वाँ इस लताफ़त से धूप कि ज़र्दी का जो ज़ाफ़राँ पर हो रूप
न आतश का ख़तरा न बारिश का डर न सरदी न गरमी का उस में ख़तर
हरे और भरे सब गुलों से मकाँ जहाँ चाहिये जाके रख दे वहाँ
दुरख़शिंदा हर सक़्फ़ दालान की हो दीवार जैसी चिराग़ान की

ज़मीं वहाँ की सारी जवाहिर निगार । अधड़ में चमन और हवा में बहार

किसी को हो जिस चीज़ की ख़्वाहिश ताक । नज़र आये वह चीज़ बालाय ताक़ ।

जवाहिर के ज़ीस्त वह शोतयूर । ख़िरामाँ फिरें सहन में दूर दूर ।

फिरें दिन में सारे वह हैवान हो । करें रात को काम इन्सान हो

लगे हर तरफ़ गौहरे शबचिराग़ । वही दिन को गौहर वही शबचिराग़

बनाये हुये जाल बाहम निहाल । गुलो गुंचा सब वहाँ के दूर अज़ ख़्याल

सदा आप से आप घड़ियाल की । कहीं नाच की और कहीं ताल की

रहें वहाँ के हुजरों का जो दर खुला । तो दुनियाँ के बाजों की आये सदा

अगर बन्द कर दीजिये एक बार । तो जो अरग़नूं राग निकलें हज़ार

मकानों में मख़मल का फ़र्शो फ़रूश । बरखत्ते सुलेमानी उन पर नक़ूश

तिलिस्मात के परदे और चिलमनें । इरादे पै दिल के उठें और गिरें ।

ख़वासें परीज़ाद उस में तमाम । फिरें गिर्द गिर्द उस परी के मुदाम

सरे नहर बँगला मुरस्सा निगार । सराप्पा बरंगे गुहर आबदार ।

रखा शाहज़ादे का उस में पलंग । खुला हुस्न से उस के बँगले का रंग

क़ज़ारा खुली आँख उस गुल की जो । न पाई वहाँ शहर की अपनी बू

न वह लोग देखे न वह अपनी जा । तअज्जुब से इक इक को तकता रहा

अचंभे का था ख़्वाब देखा जो वहाँ । लगा कहने यारब मैं आया कहाँ

ग़िज़ाल था वह लड़का तो सहमा भी कुछ । हुआ कुछ दिलेर और हैराँ भी कुछ

सिरहने जो देखी महे चारदह । कि है अजनबी सी वह इक रश्क़ मह

कहा कौन है तू यह किसका है घर । ले आया मुझे कौन घर से इधर ।

फिरा मुँह को ले और उधर से नक़ाब । दिया उस परी ने यह हँस कर जवाब

ख़ुदा जाने तू कौन मैं कौन हूं । मुझे भी तअज्जुब है मैं क्या कहूं

पर अब ख़ुद तू आया है यों मेरे घर । ले आई है तुझको क़ज़ा वो क़दर

यह घर गो कि मेरा है तेरा नहीं   पर अब घर यह तेरा है मेरा नहीं
तेरे इश्क़ ने मुझ को शैदा किया   तेरा ग़म मेरे दिल में पैदा किया
छुड़ा कर तेरा तुझ से शहरो दियार   यह बन्दी ही लाई है तकसीरवार
परी हूं मैं और यह परिस्तान है।   यहा सब ये क़ौमे बनी जान हैं
कहाँ सूरतें जिन कहाँ शक्ल इन्स   ग़रज़ क़हर है सुहबते ग़ैर जिन्स
परी को हुई शादी उस मह को ग़म   पै नाचार क्या कर सके वह सनम
कभी यों भी है गरदिशे रोज़गार   कि माशूक़ आशिक़ के हो इख़्तियार
ग़रज़ दिल को जों तों लगा था वहाँ   कहा उसने जो कुछ कहा उसको हाँ
वलेकिन न अक़्लो न होशो हवास   रहै वह शियों की तरह वह उदास
कभी अश्क आँखों में भर लाय वह   कभी साँस लेकर कहै हाय वह
वह महलों की चुहलें वह घर का समाँ   रहै रूबरू ध्यान में हर जमाँ।
वह शफ़क़त वो मा बाप की याद आय   तो रातों को रोरो के दरिया बहा
कभी अपनी तनहाई का ग़म करै।   कभी अपने ऊपर इश्वादम करै
कै रयारजब अपना नाज़ो नअम   फ़िगाँ ज़ेरलब वह करै दम बदम।
बहाने से दिन रात सोया करै।   न हो जब कोई तब वह रोया करै
ग़रज़ इज़तराब उसको हर हाल में   कि जों मुर्ग़ तड़पे नया जाल में
ग़रज़ माहरूउस परी का था नाम   पिदर से छिपा था यह पोशीदा काम
कभी घर में रहती कभी रहती व्हाँ   कि नाराज उसका न होवै अयाँ।
वह परियों में अज़बस की थी ज़ीशऊर, नई चीज़ लाती थी उस के हुज़ूर।
अजायब ग़रायब परिस्तान के   दिखाती थी हर शब उसे आनके
नये खाने औरमेवे अक़साम के   मुहय्या सब असबाब आराम के
नई किश्तियाँ रोज़ पोशाक की   ख़ुशामद सदा जानग़मनाक की
नये स्वाँग व्हाँ के नये रागो रंग   कितादिल लगै और न होजीव तंग

शराबों के शीशे चुने ताक़ में। गज़कवह कि निकाले न आफ़ाक़ में
शराबों क़बाबों बहारो निगार जवानी व मस्ती वो बोसो कनार
न था और कुछ ग़मनो उसको वहाँ बग़ैर अज़ ग़मे दूरये दोस्ताँ
उसी ग़म में घुलघुल के मरता था वह सदा शामसुबह आह करता था वह
परी वहजो थी दिल लगाये हुये वह बैठी थी उस को उड़ाये हुये।
वह बीनाज़नी औरबहुत अक़्लमन्द नखुलनेसे कुछ उसको होतीथीबंद
कहा यक दिन उसने ऐ बेनज़ीर मेरे दाम में तू हुआ है असीर
तु यक काम कर यक पहर फिर कहीं किया कर तु कुछ एक सैरे रूये ज़मीं।
तु रुक २ के दिल को न कर अपने बंद न पहुँचे कहीं तेरे दिल को गज़ंद
मेरे शाम जाती हूँ मैं बाप पास। अकेला तु रहता है इस जा उदास
वह घोड़ा मैं देती हूं कल का तुझे वलेकिन ये दे तू मुचल्का मुझे
कि गर शहर की तर्फ़ जावे कहीं व या दिल किसी से लगावे कहीं
तो फिर हाल हो जो गुनहगार का वही हाल हो तुझसे दिलदार का
कहा क्यों कि मैं उसको जाऊंगा भूल मुझे जो कहा तुम ने सब है क़बूल
कहा माहरुख़ ने कि थे तेरे बख़्त कि बख़्शा तुझे मैं सुलेमाँ का तख़्त
जो उतरे तो कल उसकी यों जोड़ियो जो बर अक्स चाहे तो यों मोड़ियो
ज़मीं से लगा और ता आसमाँ जहाँ चाहियो जाइयो तू वहाँ

दास्तान घोड़े की तारीफ़ में.

कहूं क्या मैं उस अस्प की ख़ूबियाँ परिन्दों में हों कब यह मह्बूबियाँ
ज़रा कल को मोड़े फ़लक पर हुआ जो कहिये तो कहिये उसे आदपा
न खावे न पीवे न सोवे कभी न हाँपे न बीमार होवे कभी।
न हशरी न क़मरी न शबकोर वह न वह कुहना लंग और न मुंहज़ोर वह

न हड्डों का नह मोटरों का ख़लल न पेशानी ऊपर सितारे का बल।
न सायिन न नागिन न भौंरी का डर हरएक ऐब से वह ग़रज़ बेहतर
वह घोड़ा जो इस कल की था बरख़ा का फ़लक सैर था नाम उस रख़्श का
सरे शाम वह बेनज़ीरे जहाँ उसी रख़्श पर होके ज़िलवा कुनाँ
हरएक तर्फ़ से हो गुज़रता था वह वही इक पहर सैर करता था वह
पहर जब कि बजता तो फिरता शिताब कि फिर क़हर था माहरुख़ का इताब

दास्तान वारिद होने में बेनज़ीर के बाग़ में बद्रेमुनीर के

किधर है तु ऐ साक़िये शोख़ रंग कि आया हूं मैं बैठे बैठे बतंग।
पिला मुझको दारू कोई तेज़ो तुंद कि होता चला है मेरा ज़ेहन कुंद
मेरे तो सने तवस्सुर को पर लगा मुझे यहाँ से ले चल फ़लक पर उड़ा
सुनो एक दिन की यह तुम वारदात उठा सैर को बेनज़ीर एक रात।
हुआ नागहाँ उसका इक जा गुज़र सुहाना सयक बाग़ आया नज़र
सफ़ेद एक देखी इमारत बलन्द कि थी नूर में चाँदनी से दोचन्द
वह छिटकी हुई चाँदनी जाबजा वह जाड़े की आमद वह ठंढी हवा।
वह निखरा फ़लक और मह का ज़हूर लगा शाम से सुबह तक बक़्त नूर
यह आलम जो भाया जो कोठे पे आ उतर अपने घोड़े से औ सर झुका।
लगा झाँकने उस मकाँ के तईं कि देखूं तो यहाँ कोई है या नहीं
जो देखा तो ऐसा कुछ आया नज़र कि सब कुछ गया उसके जी से उतर
कहा जी से अब तो जो कुछ हो सो हो ज़रा चलके इस सैर को देख लो।
यह कह नीचे उतरा दबे पाउँ वह नज़र से बचाये हुये छाउँ वह।
अलग खोल हाथों से हाँ के किवाड़ चला साया साया दरख़्तों की आड़।
थे एक तर्फ़ गुनुजान बाहम दरख़्त कि लिपटे हों जिस तरह कुरता क़सरत

लगा व्हाँ से छिप छिप के करने नज़र	दरख़्तों से जो माह हो जिलवागर
जो देखा तो सुहबत अजब है वहाँ	अजब चाँदनी है अजब है समाँ
अजब सूरतें और तुरफ़ा महल्ल	चला देखते ही दिल उसका निकल
मिली जिन्स की अपने जो उसको बू	लगा तकने हैरत से हर सम्त सू
नज़र आई व्हाँ चाँदनी की बहार	कि आँखों ने की ख़ीरगी इख़्तियार
दरो बाम इक लख़्त सारे सपेद	हर सम्त ताक़ मेहराब सुबहे उमेद
मुग़र्रक़ ज़मीं पर तमामी का फ़र्श	झलक जिसकी ले फ़र्श से ता ब अर्श
ज़मीं का तबक़ आसमाँ का तबक़	सुनहले रुपहले हों जैसे वरक़।
बिलोरीं धरें हर तरफ़ संग फ़र्श	कि जिस से मुनव्वर रहे रंग फ़र्श

तसवीर इमारत वो बाग़.

गईउसकेआलमपेजिसदमनिगाह
श्रौरआईनज़रउसमेंइकरश्कमाह

तरहउसकीहरदिलकीमानूसथी
किगोयावहशीशेकीफ़ानूसथी

कहैं देख उस के तईं होशमंद
परी को किया है गा शीशे में बन्द

हरइकसिम्तवाँ नूर का इज़दहाम्
लगे आईने क़द आदम तमाम

लपेटे हुये बादलों से दरख़्त
ज़मीनो हवा साइबे तज़ो तख़्त

सुलखनवहचौपड़की पाकीज़ानहर
पड़े चश्मये माहसे जिस में लहर।

लबे नहर पर साफ़ जो गौर की
तो पटरी थी वह एक निखोर की

पड़े उस में फ़व्वारे छुटते हुये
हवा बीच मोती से लिपटे हुये।

सुक़ररेज़ पड़ा उस में सुक़ेश जो
गिरा माहवाँ रख़्क से पुरज़े हो।

लिये गोद सुक़ैश छोटे बड़े।
हर इक जा सितारे उड़ावें खड़े

ग़रज़ अपनी सूरतसे तारों कोतोड़
ज़मींको फ़लकका बनायाथा जोड़

हवा में वह सुगन्धु से चमकें बहम
मलैं ज़िलवये मह को ज़ेरे क़दम

फ़क़त चाँदनी में कहाँ तौर यह
कि तुरानजब तक मिले और यह

ज़मानाज़र अफ़शाँ हवाज़र फ़िशाँ
ज़मींसे लगाता समाँ ज़र फ़िशाँ।

गुलो ग़ुंचा ज़रीं वो ताज़ो ख़रूस
ज़मीने चमन सबज़बीने अरूस।

ख़िरामाँ ज़री पोश हर माह वश
करैं देखकर मेहरो मह जिनको ग़श

खड़ा एक नसगीरयेज़र निगार
कि थे जिसके झालर पै मोती निसार

जड़ाऊ वह इस्तादे इलमास के।
ढले एक साँचे के यक रास के।

खिंची डोरी हर तर्फ़ ज़र तार की
लड़ी जो किनारे के हों हार की

कहूं क्या मैं झालर की उसकी फ़बन
कि सूरज की हो गिर्द जैसे किरन

मुग़रक़ बिछी मसनद इक जगमगी
यह थी चाँदनी जिसके क़दमों लगी

न फूले समाते थे तकिये धरे
कि थे वह फ़क़त रुखही से भरे

बिलौरी सुराही वह जामें बिल्लर
दिलोदीदा वक़्फ़े तमाशाय नूर।

वह दुरखड़ा जिसे देख मह दाग़ खाय। वह नक़शा कि अक्सवीर को हैरत आय
जो कुछ चाहिये ठीक नख़ शिख से अंग नज़ाक़त भरा सेवती का सा रंग
कुछ एक तमकनत और कुछ इक बाँकपन, ग़रज़ हर तरह में अनोखी फ़बन।
करिश्मा अदा ग़मज़ा हर आन में ग़रज़ दिलबरी उस के फ़रमान में
तग़ाफ़ुल हया नाज़ इशवा ग़रूर हरइक अपने मौक़े से वक़्ते ज़रूर।
तबस्सुम तकल्लुम तरह्हुम सितम मुआफ़िक़ हरइक हौसले के करम
वह अबरू कि मेहराब ऐवान हुस्न झुकी शाख़ नख़ले गुलिस्तान हुस्न
निगाह आफ़ती चश्म सैने चला मज़ा दें सफ़ों को उलट बरमला।
दरे गोश जब उस का ताबिन्दा हो सदफ़ का दिले साफ़ शरमिन्दा हो
वह बीनी कि जिस की नहीं कुछ नज़ीर है अंगुश्त क़ुदरत की सीधी लकीर
वह रुख़सार नाज़ुक कि हो जाय माल अगर उस पै बोसे का गुज़रे ख़याल
नहीं रू त्यो था बिस का याँ कुछ हिसाब बयाज़े गुलू सब के सब इन्तख़ाब।
वह साइद वह बाज़ू भरे गोल गोल। बराबर हो इल्मास के जिस का मोल।
वह दस्ते हिना बस्ता ख़ूबी का बाब शफ़क़ में हो चूं पंजये आफ़ताब
ज़िबस मिस्ल आइना था उस का तन कहै तू की थी नाफ़ अक्से ज़क़न
कमर को कहूं क्यों कि मैं उस के हेच न आवे नज़र तो है क़िस्मत का पेच
वह ज़ानू कि आ जाय गर उस पै हाथ रहै उम्र भर हाथ ज़ानू के साथ
वह साक़े बिलूरीं वह अंदाज़ पा फिरै हर सहर चश्मो दिल में सदा
क़दे क़ामत आफ़त का टुकड़ा तमाम क़यामत करै जिस को झुक कर सलाम
वह अठखेलियाँ और वह उस की चाल कि दिल जिस से आलम का हो पायमाल
बना कब्क कैसी ही गो चाल लाय। कहाँ पर वह रफ़्तार को उस के पाय
अलग चाल उस की कोई क्या चले वह अंदाज़ सब उस के पावों तले
अजब पुश्त पा साफ़ अंगुश्त पा कफ़े पा दिखावै सेरे पुश्त पा।

सुर्ग़रुख़जवाहिरसेइकजुस्फ़ाफ़्श
नवहसुफ़्क़ावल्किपाशुफ़्र्कश।

यहकुदरतकादेखाजोउसनेकमाल
कहाशाहज़ादेनेयाज़ुलजलाल

दरख़्तों से वह देखता था निहाँ
किसी की नज़रजा पड़ी नागहाँ।

जो देखे तो है इक जवाने हसीं।
दरख़्तों की है ओट में महजबीं।

यहचरचाजोफैलातोज़ाहिरहुवा
हरइकहालसेउसके माहिरहुवा।

यह सुनएक से एकयाँ सबकेसब
फिरें बर्गगुलकी तरह गुंचा लब।

जोदेखेंतोशोलासारौशनहै कुछ।
दरख़्तोंकारौशनसाआँगनहैकुछ

किसीनेकहाकुछनकुछहैबला।
किसी ने कहा चाँद है याँ छिपा।

किसी ने कहा है परी या कि जिन
किसी ने कहा है क़यामत का दिन

लगीकहनेमाथाकोईअपनाकूट
सितारा पड़ा है फ़लक पर से टूट।

हुईसुबहशबकागयाउठहिजाब
दरख़्तों में निकलाहैयह आफ़ताब

किसी ने कहा देखयों से बुवा
खड़ा है कोई साफ़ यह मर्दुवा

किसीनेकहायहतो दिलदार है
किसी नेकहा कुछ यह इसरार है

यह आपस में बातें जो होने लगीं
इशारों से बातें जो होने लगीं।

गईबात यह शाहज़ादी के गोश
यहसुनतेहीजातारहाउसकाहोश

कहा मैं तो देखूं यह कहकर उठीं
गयासनसनाजी तो रह कर उठीं।

ख़वासोंकेकाँधेपेधरअपनाहाथ
अजबइकअदासेचलीसाथसाथ

कुछइकख़ौफ़सेहौलखातीहुई
धड़कअपने दिलकी मिटातीहुई

कईहमदममें थींजोकुछकुछबड़ी
दुआयेंवहपढ़ पढ़ के आगे बढ़ीं

गईंजबवहकरकेदिलअपनाकरख़्त
वहाँजिसजगहथेवहबाग़ुद्दरख़्त

जो देखें तो है इक जवाने हसीं
खड़ा है वह आईना सा महजबीं

सरकने की हाँ सेनजागहनठां
दिये हैरते इश्क़ ने गाड़ पाँउ

बरस पन्दरह या कि सोलः का सिन
मुरादों की रातें जवानी के दिन।

नई पुश्त लब से मिसी की नमूद | जिसे देख नीला हो चर्खे कबूद
गलेमें पड़ा नीमा शबनम का एक | बदन से अयाँ नूर आलम का एक
तमामी की संजाफ़ जिलवा कुनाँ | कि चूँ अक़्स मह जेब आबे रवाँ
तरहदार इक सिर पे फेटा सजा | तमामी का पटका कमर से बँधा
अजब पेच से पेच बैठे थे मिल | कि हर पेच पर पेच खाता था दिल
जवाहिर का तकमा गले में लगा | सितारा हो जों सुबह का जगमगा
वह मोती का लटकन ज़मुर्रद की हर | लटक जिसकी ज़ेबिंदा दस्तार पर।
वह गोरा बदन साफ़ तरकीब वार | भरे डंड पर नौरतन की बहार।
इक इलमास की हाथ अंगुश्तरी | सरासर हिना दस्तो पा में लगी
अयाँ चुस्ती वो चालाकी गात से | नमूदे जवानी हर इक बात से।
बदन आइना सा दमकता हुवा | गुले बाग़ ख़ूबी लहकता हुवा
खड़ा ज़ुल्फ़ की और का कुल का बल | जवानी की शब और समा बर महल
क़याफ़े से ज़ाहिर सरापा शऊर | जबीं पर बरसता शुजाअ़त का नूर
बले इश्क़ की तेग़ खाये हुये | खड़ा दिल किसी पर लगाये हुये
यह आलम जो देखा तो ग़श कर गईं | वह जितनी कि आई थीं सब मर गईं
शिताबी से जाकर कहा वाँ का हाल | किसे शाहज़ादी ये साहिब जमाल
अजब सैर है सैर महताब में | यह आलम तो देखा नहीं ख़्वाब में
कहे से हमारे न मानोगी तुम | जो देखोगी आँखों तो जानोगी तुम
उठा पाय गुलगूँ को जल्दी निगार | न जाये कहीं हाथ से यह बहार
नहीं और कुछ तुम न कीजो हिरास | चली आवो तुम इन दरख़्तों के पास
गई उस जगह जब वह बद्रे मुनीर | और उस ने जो देखा शहे बेनज़ीर
गये देखते ही सब आपस में मिल | नज़र से नज़र जी से जी दिल से दिल
ग़रज़ बेनज़ीर और बद्रे मुनीर | गिरे दोनों आपस में होकर असीर

रही कुछ न तन मन की सुध बुध उसें
न कुछ अपने तन की रही सुध उसे

थी हमराह इक उसके दुख़्तेवज़ीर
निहायत हसीं और क़यामत शरीर

जिबस थी सितारे से वह दिलरुबा
उसे लोग कहते थे नजमुलनिसा।

शिताबी से ला उसने छिड़का गुलाब
तब आई तनों में ज़रा आबोताब।

वह उठते तो उठी पै हैरान सी
गुले शबनम आलूदा गिरयान सी

वह शहज़ादये दिलशुदः सो ठिठक
वहीं रह गया नक़्श पासा भुचक

कि वह नाज़नीं कुछ भिजक मुँह छिपा
कमर और चोटी की आलम दिखा

चली उस के आगे से मुँह मोड़ कर
वहीं नीम बिस्मिल उसे छोड़ कर

व गुद्दी वह शाने वह पुश्ते कमर
वह चोटी का कोने पै आना नज़र

दास्तान ज़ुल्फ़ और चोटी की तारीफ़ में.

पिला साक़िया सागरे मुश्क़ बू
कि है मुझ को दरपेश तारीफ़ मू।

सरे शाम से दे यहाँ तक शराब
कि मस्ती में देखूं रुख़े आफ़ताब

करूं उसके बालों का क्या मैं बयाँ
न देखा किसी रात में यह समाँ।

वह ज़ुल्फ़ें कि दिल जिसमें उलझा रहे
उलझने से जी जिसके सुलझा रहे।

वह कंघी वह चोटी खिंची साफ़ साफ़
किनारी का पीछे चमकता सुवाफ़

कहूं उस की चोटी का क्या रंग ढंग
कि जों आख़िरी शब हो भुम्मके का रंग

नुमायाँ थी यों ओढ़नी से झलक
कि जों अब्र में वर्क़ की हो चमक

सुवाफ़े ज़री ने किया है ग़ज़ब।
दिया है गिरह दिन को दुम्बाल शब

सिंगारों में वह सब से है गो उतार
पै कहते हैं चोटी का उसको सिंगार।

न हो क्योंकि चोटी का रुतबा बड़ा
कि इक नूर है उसके पीछे पड़ा

गुलो संबुल उस पर से क़ुर्बान है
कि उसकी लटक में अजब आन है।

लड़ी थी ज़िबस सहर से उस के साँठ
शबो रोज़ को देखा उस ने गाँठ

बलेहाथ आना है उसका कठिन कि है फ़िलहक़ीक़त वह काले कमन
उलट कार न देखे उसे होशियार कि वह इक सितारा है दुंबालादार।
कि पीठ उसकी शफ़्फ़ाफ़ आईनासाँ तिस ऊपर वह चोटी का पड़ना वहाँ
कहूं उसके आलम का क्या माजरा कि जों होवे दरया पै काली घटा
भरी थी दिलों से ज़िबस उसकी माँग बहुत दिल लिये उसकी कंघीने माँग
दिले आशिक उस परसे क़ुर्बान है कि मश्शाता का सिरपै अहसान है
कशाकश में था वरना जीना तो हेच भले को रखा उसने ढीला है पेच।
ग़रज़ हुस्न का उसके है सब यह भेद जो चाहे करे वह सियाहो सफ़ेद
करे सुर्ख़ जो कोई/उस में सुवाफ़ करे ख़ून दिल अपना उसको मुआफ़
किया क़त्ल गो उसने दिल को तो क्या शफ़क़ का नहीं काम पर ख़ूं बहा
कहाँ तक कहूं उसकी चोटी की बात कि थोड़ा है स्वांग और बड़ी है यह रात
दिया शेर को गरचे हर बार तूल वलेकिन यह हो अर्ज़ मेरी क़बूल
बहुत मूशीगाफ़ी जो की मैं ने याँ घटाने की जागह न थी दरमियाँ।
तिस ऊपर जो पूरी न बैठी मिसाल हुई है मेरी फ़िक्र मुझ पर वबाल।
अब इस पेच से बाहर आता हूं मैं समाँ एक ताजा दिखाता हूं मैं
ग़रज़ वह मुड़ी जब दिखा अपने बाल तो गोया कि मारा मुहब्बत का जाल
अदायें सब अपनी दिखाती चली छिपा मुँह को और मुसकराती चली
ग़ज़ब मुँह पै ज़ाहिर बले दिल में चाह निहाँ आह आह और अयाँ वाह वाह
यह है कौन कमबख़्त आया यहाँ मैं अब छोड़ घर अपना जाऊं कहाँ
यह कहती हुई आन की आन में छिपी जाके अपने वह दालान में।
दिया हाथ से छोड़ परदा शिताब छिपा अब्र तारीक में आफ़ताब
कि इतने में आई वह दुख़्ते वज़ीर लगी हँस के कहने कि बद्रेमुनीर
मुझे चोचले तो ख़ुश आते नहीं तेरे नाज़ बेजा यह भाते नहीं।

मेरे तर्फ़ टुक देख तू हाय हाय मसलहै किमनभावैंमुड़िया हिलाय
किया है अगर तू ने घायल उसे तोमत छोड़ अब नीम बिस्मिल उसे
टुक एक हज़ उठा ज़िंदगानी का तू मज़ा देख अपनी जवानी का तू
मये ऐश का जाम अब नोश कर ग़मे दीनों दुनियाँ फ़रामोश कर।
यह हुस्नो जवानी यह जोशो ख़रोश ग़फ़ूरस्त एज़द तु साग़र बिनोश।
कहाँ यह जवानी कहाँ यह बहार यह जोबन का आलम रहै यादगार
सदा ऐश दौराँ दिखाता नहीं। गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं।
सभी यों तो दुनियाँ के हैं कारोबार वले हासिले उम्र है वस्ल यार।
ख़ुशा वह ज़माना कि दो एक जगह करें एक दिगर जिलवये मेहरो मह
कहाँ चाह वाले हैं यूसुफ़ अज़ीज़ अरी बावली चाह में कर तमीज़
तेरे घर में आया है मेहमाँ ग़रीब यह है वारदाते अजीबो ग़रीब।
शिताबी से मजलिस को तय्यार कर तु इस गुल से घर रश्क गुलज़ार कर
बुला साक़िया ने गुल अन्दाम को निगह साथ गर्दिश में ला जाम को
शबो रोज़ पी मिल के जामें शराब महो मेहर को रश्क से कर कबाब
यह सुन सुन के वह नाज़नी मुस्करा लगी कहने अच्छा भला री भला
मैं समझी तेरा दिल गया है उधर बहाने तु करती है क्यों मुझ पै धर
लगी कहने हँस हँस के वह माहवश हुई थी उसे देख मैं तो ही ग़श।
तुम्हीं ने तो छिड़का था मुझ पर गुलाब भला मेरी ख़ातिर बुला लो शिताब
यह आपस में रमज़ों की बातें हुईं इशारों की बाहम जो घातें हुईं
बुला लाई जा उस जवाँ के तईं किया मेज़वाँ मेहमाँ की तईं।
बुला एक मकाँ में बिठाया उसे महल का समाँ सब दिखाया उसे
फिर उस नाज़नी ने पकड़ उसका हाथ पिठाया हैला आख़िर उस गुल के साथ

दास्तानमुलाक़ातकरनाबद्रेमुनीरकाबेनज़ीरसे

पिलासाक़ियामुझकोसहबायऐश मिले हैं नसीबों से यहाँजाय ऐश
वहम मिल के बैठे हैं दो रश्क मह क़िराने महो मेहर है इस जगह
हरएकबुर्ज़रश्केगुलिस्ताँहैआज बहारे विसाले ग़रीबाँ है आज
बज़ोरउसकोलाकरबिठायाजो वाँ न पूँछ उस घड़ी की अदा का बयाँ
वह बैठी अजब एक अन्दाज़ से बदन को चुराये हुये नाज़ से
मुँह अंचलसेअपना छिपाये हुये लजाये हुये शर्म खाये हुये।
पसीना पसीना हुआ सब बदन किजोंशबनमआलूदाहोयासमन
घड़ीदोतलकवहमहोआफ़ताब रहे शर्म से पाय बन्दे हिजाब।
उन्हों के रुके बैठने से ख़फ़ा। हुईदिलमेंअपनेवहनजमुन्निसा
गुलाबीकोलाउसके आगे धरा पियाले को फिरजल्द उस ने भरा
कहा शाहज़ादी को बैठी है क्या यहप्यालातोइसबुतकेमुँहसेलगा
ज़रा मेरी खातिरसे हँस बोल दू लबेलाल शीरींकोटुक खोलदू
मैं सदक़े तेरे तुझको मेरी क़सम कई साग़र उस को पिला दम बदम
यहदेखउसकी मिन्नत पियालाउठा उधरसेफिरामुँहको औरमुसकुरा
कहाबादनोशीसेहो जिसकोज़ौक़ पियेयहपियालानहींउसकाशौक़
कहाशाहज़ादे ने हँस करके यों पियूं मैं किसी के निहोरे से क्यों।
ग़रज़होकेआपसमेंराज़ो नयाज़ पियेदो पियाले बसदइमतियाज़
फिरआख़िरकोशाहज़ादेनेभीउठा दियासाग़रउसमहकेमुँहसेलगा
जबआपसमेंचलनेलगेजाममुल गुँदेगुंचासा दिल खिले मिस्लगुल
हुईयकदिगरफिरतोतफ़तीशहाल लगेहोनेआपसमेंकालोमकाल
खुला बन्द जिस दम दरे गुफ़्तगू ज़बाने हक़ीक़त कही मूबमू।

कही इब्तिदा से गुज़री थी सब
जतायासब अपनाहसब औरनसब
परीकाभीअहवालज़ाहिरकिया
छिपेराज़ सेउसको माहिर किया
कहायकपहरकीहैफ़ुरसतमुझे
ज़ियादा नहीं इससे फ़ुरसत मुझे।
यहसुन दिलहीदिलमेंचखापेचताब
दियाशाहज़ादीने उस को जवाब।
मरो तुम परी पर वह तुम परमरे
बस अबतुमज़रा मुझसे बैठो परे
मैं इस तरह का दिल लगाती नहीं
यहशिरकततो बन्दीकोभाती नहीं
अबसतुमसेक्योंदिललगावेकोई
भलेचंगे दिलको जलावे कोई।
वहे शमअसाँ क्यों कोई अश्कसे
जले किस लिये आतसे रश्क से।
यहसुन पाउँ परगिर पड़ा बेनज़ीर
कहा क्या करूं आह बद्रेमुनीर।
कोईलाखजीसेहोमुझपरफ़िदा
मैंतुझपरफ़िदाहूं मुझे उससे क्या
कहा चलसिरअपनाक़दमपररखधर
किसीकेमुझेजीकी क्याहै ख़बर
यह रमज़ो कनायेजो होने लगे
तो आपस में हँस हँस के रोने लगे
रही दिलही दिल में ग़रज़ दिलकीबात
पहर भर गई इतने अरसे में रात
ख़बर रात की सुनउठा बेनज़ीर।
कहा अब मैं जाता हूं बद्रेमुनीर
अगर क़ैद से छूटने पाउँगा।
तोफिरआजकेवक़्तकल आउंगा।
यह मत समझियोहूं मैंआराममें
करूं क्या फँसा हूं अजब दाम में
दिलइसजासेउठनेको करता नहीं
कोई आप से जान मरता नहीं
करमसुझपैररखियोज़रा मेरीजाँ
मैंदिलछोड़ेजाताहूं अपना यहाँ
यहकहउसतरफ़कोरवाना हुवा
दिलइसतर्फ़उसका दिवाना हुवा।
गया अपने मामूल से बेनज़ीर।
इधर का हुआ क़ैदी ऊधर असीर
परी साथ काटी वह जोंतोंकीरात
उठासुबह मलताहुआ अपनाहाथ
समा शब का आँखों में छायाहुवा
मज़ा दिल में सारा समाया हुवा।
उठीजोकोई देखकरवस्ल ख़्वाब
नहोवस्लऔरदिलकोहोइज़्तराब

नई बात का लुत्फ़ पाना ग़ज़ब
वह पहिले पहिल दिल लगाना ग़ज़ब

कलक दिल पै यानी कि दे रोज़ कब
मिले मुझ से शमए दिल अफ़रोज़ कब

मुहब्बत में ज़ुल्फ़े सियह फ़ाम की
लगा देखने राह फिर शाम की।

वह दिन हिज्र का उस पै शामत हुवा
उसे काटना दिन क़यामत हुवा

इधर का तो अहवाल था इस तरह
कहा मैं ने कर मुख़्तसर जिस तरह

ज़रा अब सुनो तुम उधर का बयाँ
हुआ नर्फ़ सानी का क्या हाल वाँ।

वह शब उसको अन्दोहग़म में कटी
घड़ी जो कटी सो अलम में कटी।

रही सूरत आँखों में जो यार की
हुई याद में सुबह रुख़सार की

कुछ उम्मैद दिल में कुछ इक जी को यास
लबों पर हँसी लेक चेहरा उदास

लगा उसको बातों में नजमुलनिसा
लगी कहने जी चाहता है मेरा

कि हूँ आज कर ख़ूब अपना सिँगार
मुझे हुस्न की अपनी दिखला बहार

लगी कहने चल री दिवानी न हो
कोई चीज़ अपनी बिगानी न हो

करूं किसके ख़ातिर मैं अपना सिँगार
वह है कौन जिस को दिखाऊं बहार

ग़रज़ शाहज़ादी बहुत दूर थी
यह शक्ल उसको पहले ही मंज़ूर थी

नहा धोके उस रोज़ ऐसी बनी।
कि दो दिन की सच मच वह जैसी बनी

वह मुखड़े का आलम वह कंघी का रंग
शबे माह हो देख कर जिस को दंग

वह मिस्सी वह उसके लबे लाल फ़ाम
सवारे स्यारे बदरश्याँ की शाम

वह आँखों का आलम वह काजल ग़ज़ब, कहे तू पड़ी नरगिसिस्ताँ में शब

सितम तिस पै सुरमे की तहरीर सी
खिंची हाथ काफ़िर के शमशीर सी

लखोटा वह पानों का मिस्सी के साथ
कि जों दाम ने शब शफ़क़ के हो हाथ

वह पिशवाज़ एक डाँक की जगमगी
सितारों की थी आँख जिस पर लगी

और यक ओढ़नी ख़ाली मुक़ैश की
पड़ी चाँदनी सी महे ऐश की

जो देखे वह अँगिया जवाहिर निगार
फ़रिश्ता मले हाथ बेइख़्तियार

वह बारीक कुरती मिसाले हवा   श्रया मूबमू जिससे तन की सफ़ा
झलक सुर्ख नेफ़े की उभरी हुई   गुलाबी सी गिर्दएक लहरी हुई।
मुग़रिक़ ज़री का वह शिलवारबंद   मुरइया से ताबिन्दगी में दोचन्द
पड़ी पाउँ में कफ़श ज़री निगार   सितारों की जिस की ज़मीं पर बहार
लगो पासे वह नाज़नी ताब फ़र्क़   सरापा जवाहिर के दरिया में ग़र्क़
गढी हुई वह तरकीब और वह बदन   वह पोशाको ज़ेवर की उस पर फ़बन
वह छब तख़्ती उसकी नज़ाक़त नज़र   चमन ज़ार कुदरत में नख़्ले मुराद
भरी माँग मोती से जिलवा कुनाँ   तुमायाँ शबे तीर में कहकशाँ।
वह माथे पै टीके की उस की झलक   सहर चाँद तारों की जैसी चमक
हवस हो न देख उस के ज़ेवर को फिर   कहे वह किटी का था सब उस के सिर
वह बाले की ताबिन्दगी ज़ेर गोश   जिसे देख उड़ जायँ बिजुली के होश
वह हीरे का तकमा बसद आबो ताब   वह सुबहे गुलो मत लये आफ़ताब
वह तकमे पै चंपाकली की फबन   कि सूरज के आगे हो जैसी किरन
वह छाती पै इलमास की धुकधुकी   रहे आँख सूरज की जिस पर झुकी
वह मोती के माले लटकते हुये   रहें दिल जहाँ सिर पटकते हुये
वह इल्मास की हैकल इक ख़ुशनुमा   तसव्वर रहे जिस का दिल से लगा
वह भुजयन्द बाज़ू के औ रनौरतन   कि जों गुल से हो शाख़ ज़ेरे चमन
वह पहुँची ज़मुर्रद की और दस्तबंद   नज़ाक़त में थी शाख़ गुल से दोचन्द
वह लालों की पाजेब आवेज़ादार   सदा अश्क़ ख़ूनी हो जिस पर निसार
वह मीने के पावों में छल्ले थे कुल   कि आँखों से दिल उन पै खाते थे गुल
वह बालों की बू रश्के मुश्के ख़ुतन   वह डूबा हुआ अतर में उस का तन
ज़मीं से मुअत्तर हुआ ता फ़लक   ज़माना गया उस की बू से महक
किया इस तरह से जब उसने सिंगार   हुस मेहरो मह हैं उस के मुँह पर निसार

फ़लक तक गई ख़ुश्बू की उसके धूम
लिया हाथ मश्शाता ने अपना चूम

ख़वासों ने घर को दिया इन्तज़ाम
तमामी के परदे लगाये तमाम

बिछा फ़र्श और कर छपरखट को साफ़
मुरस्सा का उस पर उढ़ा कर गिलाफ़

वह नरगिस के दस्ते जो आफ़ाक़ में
न निकलें सो लाकर चुने ताक़ में

वलायत के मेवे धरे हर तरफ़
कि लेजावे बू उनकी गुल पर शरफ़

धरे लख लखे ख़ास ऐवान में
हवा हो गई इतर दालान में

धरी क्यारियाँ इक तरफ़ बेशुमार
चुनी इक तरफ़ डालियों की क़तार

अचारी मुरब्बे धरे ख़ुशनुमा
वह बाहर के दालान में जा बजा।

छपरखट के पास एक मसनद बिछा
और उस पर तमामी के तकिये लगा

चँगेरें बना और रख पानदान
क़रीने से उस में धरे हारो पान

कई इतरदाने मुरस्सा धरे।
अनोखी गढ़त के कई चौघड़े

सिरहने मुजल्लद धरी इक किताब
ज़हूरी नज़ीरी का कुल इन्तख़ाब

धरी इक बयाज़ और रश्के चमन
मुरक्क़ज़ शेर सौदा वो मीरेहसन

क़लमदान भी एक नज़ाक़त भरा
क़रीने से ज़ेरे छपरखट धरा।

धरा इक तरफ़ गंजिफ़ा ख़ुश क़िमाश
धरी चौपड़ एक तर्फ़ को ग़म तराश

बिछा एक चौकी पड़ा तोरा पोश
कि जैं देख कर ग़श जिसे बादा नोश

सुराही वो साग़र शराबो क़बाब
धरा उस पै साक़ी ने कर इन्तख़ाब

वले उस की रक्खा छिपाये हुये
कि छोड़े नहीं मुँह लगाये हुये

कहा ख़्वासा पुज़ को ख़बरदार कर
कि रक्खियो तो ख़्वासे को तय्यार कर

यह सब कुछ हुवा जब कि आरास्ता
ख़िरामा हुआ सर्व नौ ख़्वास्ता।

सरे शाम ले हाथ में एक छड़ी
वलेकिन छड़ी वह कि जुगनू जड़ी

रविश पर लगी फिरने ईधर उधर
कि छिप जाय सूरज उसे देख कर

दास्तानबेनज़ीरकेआनेकीऔरबाहमसुहबतकरनेकी

पिला मुझको साक़ी शराबे विसाल
कि अब हिज्र से तंग है मेरा हाल।
तड़पता उधर था जो वह बेनज़ीर
हुई शाम बारे तो छूटा असीर।
पर उसने भी इतना तकल्लुफ़ किया
कि एक दिन में जोड़े को धानी रँगा
तमामी की संजाफ़ सी कर दुरस्त
बना जल्द २ और पहिन तंगो चुस्त
पहिन लालो याक़ूत के नौ रतन
वह गुल इस तरह हो के रश्के चमन
फ़लक सैर पर हों शिताबी सवार
हुआ आसमाँ पर हवा एक बार
इकाइक जो वारिद हुआ उस जगह
कि जिस जा खिरामाँ थी वह रश्क मह
नज़र नाज़नी की जो उस पर पड़ी
हुई जा दरख़्तों के ओझल खड़ी
किया छिपके आलम पै उसके जो ध्याँ
तो देखा अजब रंग से वह जवाँ
कि धानी है जोड़ा गले में पड़ा
छिपा सब्ज़े में चाँद सा है खड़ा
कहे तू कि शब चाँदनी आन के
निकाला है मुँह खेत से धान के।
वह हुस्न और वह पोशाक और वह शबाब,
ज़मुर्रद में जों जिलवये आफ़ताब।
समा देख उस शोलये हुस्न का
हुई और जलने की दूनी हवा।
ख़वासें जो थी दम बखुद जानकर
कहा एक हमराज़ ने आन कर
कि अब किस तरफ़ इनको ले जाइये
जहाँ हुक्म हो जाके बिठलाइये।
कहा वह जो आरास्ता है मकाँ
इधर से तो वाँ होके लेजा वहाँ
कहे के बमूजिब उठा कर नक़ाब
छिपा उसको चौला बिठाया शिताब
वह बैठा जो खिलवत में आ बेनज़ीर
और ईधर से आई जो बद्रेमुनीर।
उसे देख उस ने तो फिर ग़श किया
लिबास और ज़ेवर से अश २ किया
ज़िबस होसिले ने जो तंगी सी की
हया इश्क़ ने खाना जंगी सी की
पकड़ हाथ मसनद पै खींचा उसे
मुहब्बत के रिश्ते से खींचा उसे।

लगी कहने हैं हैं मेरा छोड़ हाथ
यह गर्मी है जिससे रहे उस के साथ।

कहा हाय प्यारी जलाया मुझे
रुखाई ने तेरी सताया मुझे।

अरे ज़ालिम इक दम तो तू बैठ जाय
ज़रा मेरे पहलू से तकिया लगा।

तड़पता है कब से पड़ा मेरा दिल
ज़रा खोल आगोश और मुझ से मिल

ग़रज़ आख़िर अज़ बाद राज़ो नयाज़
वह मसनद पै बैठी बसद इमतियाज़

हुआ फिर तो सहबाय गुलगूँ का दौर
हुये और ही और कुछ वाँ के तौर

हुये जब वह बदमस्त दो माहरू
लगी उन में होने अजब गुफ़्तगू।

कि दस्ते जो नरगिस के थे वाँ हज़ार
लगे ढाँपने आँख बेइख़्तियार।

ख़वासें जो थी रूबरू हट गईं
बहाने से हर काम के बट गईं।

ग़रज़ रफ़्ता २ वह मद होश हो
छपरखट पै लेटे हम आग़ोश हो

लिया खींच उन्हों ने जो परदा शिताब
छिपे यकजा दो मह्हो आफ़ताब।

लगी होने बेपरवा जो छेड़ छाड़।
दरे हुस्न के खुल गये दो किवाड़

लगे पीने बाहम शराबे विसाल।
हुये नख़्ल उम्मीद से वह निहाल

लबों से मिले लब दहन से दहन
दिलों से मिले दिल बदन से बदन

लगी आँख से आँख ख़ुश हाल हो
गई हसरतें दिल की पामाल हो

लगी जा के छाती जो छाती के साथ
चले नाज़ो ग़मज़े के आपस में हाथ

किसी की गई चोली आगे से चल
किसी की गई चीन सारी निकल

ग़मो दर्द दामन कशीदा हुये।
वह गुल ना रसीदा रसीदा हुये

उठे पीके बाहम शराबे उमेद
कोई सुर्ख़रू और कोई रूसपेद

छपरखट से बाहर रख अपना क़दम
निकल आये भरते मुहब्बत का दम

नशे से वह लज़्ज़त के बेहोस हो
गये बैठ मसनद पे ख़ामोश हो।

अरक़ में इधर ग़र्क़ वह महजबीं
किये आँख नीचे उधर नाज़नीं।

यह बैठे थे ख़ुश होके बाहम दिगर
कि इतने में ऊधर से बाजा पहर